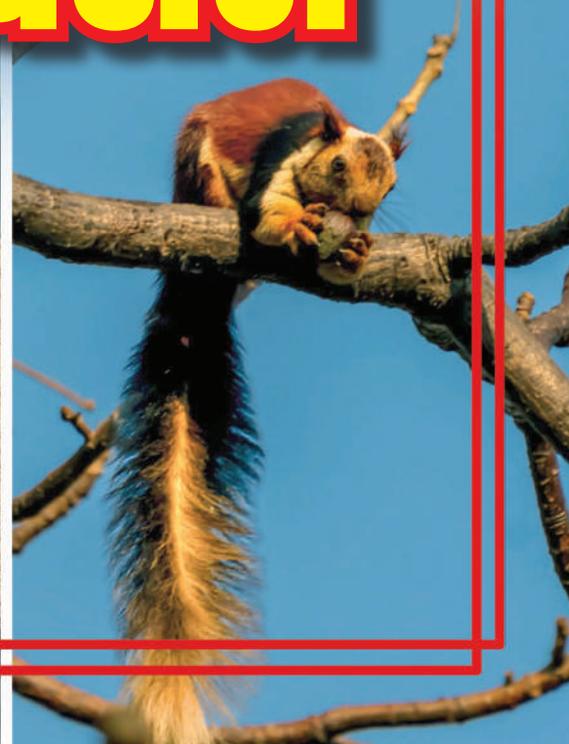


युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक



दलमा में दुर्लभ पक्षियों का बसेरा



युगांतर प्रकृति

प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित मासिक पत्रिका

प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक उत्थान,

क्षमता संवर्धन शोध एवं विकास तथा राष्ट्रीय

गौरव के लिए समर्पित संस्था



विज्ञापन दर		
1	बैक पेज	1,00,000/-
2	इनसाइड कवर पेज	90,000/-
3	फुल पेज	75,000/-
4	हाफ पेज	50,000/-



भुगतान संबंधित निर्देश

भुगतान कृपया चेक/डीडी/आरटीजीएस द्वारा Nature Foundation के नाम से करें

Account Details

NATURE FOUNDATION

Account No. : 3611740792

Kotak Mahindra Bank

IFSC Code : KKBK0005631

विज्ञापन संबंधित निर्देश

कृपया अपना विज्ञापन पीडीएफ अथवा जेपीजी फॉर्मेट में

yugantarprakriti@gmail.com

ईमेल या डाक द्वारा युगांतर प्रकृति, सेंट्रल

स्कूल के समीप, सिद्रोल, नामकुम,

रांची-834010 के पते पर भेजें।

विशेष सहयोग

'युगांतर प्रकृति' का प्रकाशन नेचर फाउंडेशन के द्वारा किया जाता है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित एक गैर लाभकारी ट्रस्ट है। पत्रिका के सुगम प्रकाशन हेतु Nature Foundation के नाम चेक अथवा डीडी के माध्यम से यथासंभव आर्थिक सहयोग आमंत्रित है।

इस अंक में खास...



4 दलमा में दुर्लभ पक्षियों का बसेरा



12

कवर स्टोरी

टाइगर को भा रहा है दलमा!

दलमा वन्यजीव अभयारण्य और आसपास के जंगल शुरु से ही बाघों के लिए पर्यावास (जीवों के रहने के लिए प्राकृतिक वातावरण वाला स्थल) रहा है। 70-80 के दशक में दलमा में बाघों की अच्छी खासी संख्या थी।

पक्षी जगत

16

कभी भारत में पाये जाते थे शुतुरमुर्ग शुतुरमुर्ग ऐसा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता। किताबों में हमने पढ़ा है कि यह केवल अफ्रीका में पाया जाता है। शुतुरमुर्ग की दो प्रजातियां जीवित हैं, एक सब-सहारन अफ्रीका में मिलती है और दूसरी हॉर्न ऑफ अफ्रीका में।



आर्द्रभूमि दिवस विशेष

20



आर्द्रभूमि को बचाना बेहद जरूरी



24

खास रिपोर्ट

अरुणाचल में दिखा हिमालयन मर्मोट

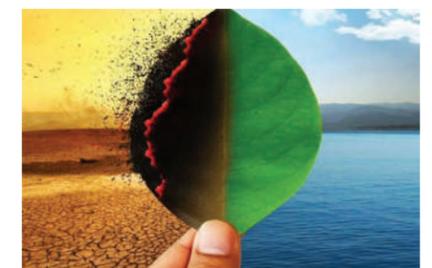
शोधकर्ता हिरण्मय चेतिया, नोएडा के एमिटी विश्वविद्यालय में डॉ. मुरली सी. कृष्णा की देखरेख में पीएचडी स्कॉलर हैं और अपनी थीसिस के लिए पिछले चार वर्षों से हिमालयन मर्मोट का अध्ययन कर रहे हैं।



26

पेंगोलिन दिवस विशेष

पेंगोलिन: जिसके शरीर का हर टुकड़े की मुंहमांगी कीमत मिलती है



29

शोध

जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ रही है चूहों की आबादी

मुख्य संरक्षक
सरयू राय

प्रधान संपादक
आनंद सिंह

संपादक
अंशुल शरण

संरक्षक मंडल
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा,
प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण,
डॉ. आर. के. सिंह

सलाहकार मंडल
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र,
डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा,
डॉ. ज्योति प्रकाश

डिजाइन आर्टिस्ट
अनवारूल हक

विधि परामर्शी
रवि शंकर (अधिवक्ता)

प्रबंधन
राजेश कुमार सिन्हा

संपादकीय कार्यालय

संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

कोलकाता कार्यालय

ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर,
कोलकाता, पिन-700040

पटना कार्यालय

201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड,
दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक मधु द्वारा झारखंड प्रिंटर्स
प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, जमशेदपुर से
मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड से प्रकाशित।
आरएनआई नंबर: JHAHIN/2016/68667
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबर: RN/248/2016-18

ई-मेल: yugantarprakriti@gmail.com
मोबाइल 7307071539, 9304955301/2



अंशुल शरण

पक्षी महोत्सव का शानदार आयोजन

प्रिय पाठकों,

आप सभी को स्वर्णरेखा महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

दलमा में इस माह तीन दिनों तक पक्षी महोत्सव का आयोजन किया गया। दर्जनों पक्षी विशेषज्ञ बाहर से आए। उन्होंने पक्षियों के बारे में रायशुमारी की। अच्छा माहौल बना। संवाद बेहद साफ था: हमें प्रकृति के अभिन्न अंग पक्षियों की देख-रेख करनी चाहिए। यह अभिनव प्रयोग था। सरकारी स्तर पर इससे पहले कोई पक्षी महोत्सव का आयोजन नहीं हुआ था। जो लोग इस महोत्सव में शिरकत कर पाने में सफल रहे, उन्हें भांति-भांति के पक्षियों को देखने का मौका मिला। खास बात यह रही कि दलमा के जंगलों में उसी दौरान बाघ के होने की पुख्ता जानकारी भी थी। बावजूद इसके पक्षीप्रेमियों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई और वे उत्साह के साथ इसमें शरीक भी हुए। बेहिचक, इस पूरे आयोजन के लिए दलमा के डिस्ट्रिक्ट फॉरेस्ट आफिसर बधाई के पात्र हैं।

प्रकृति शब्द को गौर से सुनें-गुनें तो ब्रह्माण्ड में रहने वाले चल-अचल यानी पूरी समष्टि का बोध होता है। जो प्राणी है, जो पत्थर है, जो जल है, जो थल, जो नभ है, वह सब प्रकृति का ही हिस्सा है। इस प्रकृति की हमने क्या दुर्दशा कर रखी है, यह बताने वाली बात नहीं। पक्षी महोत्सव में इस बात का तो जिक्र हुआ कि यह पक्षी यह करता है, वह करता है, यह उसकी पहचान है, यह उसका निशान है। अच्छा होता, अगर हम गायब होती गोरैया और मैना पर भी बात करते। गोरैया और मैना पहले घर-घर पाये जाते थे। अब खोजने से भी नहीं मिलते। यही हालत हमने कई पशुओं का भी कर रखा है।

तीन दिनों के पक्षी महोत्सव का फलाफल चाहे जो भी रहा हो, एक बात साफ है। अगर पक्षियों का संरक्षण नहीं किया गया, तो एक दिन ऐसा भी आएगा, जब हम किताबों में ही पक्षियों के बारे में पढ़ेंगे। यह हमें ही सोचना पड़ेगा कि पक्षियों का संरक्षण और अगर हो सके तो संवर्धन भी करने के बारे में सोचना चाहिए। जो भी लोग इस महोत्सव में आए, उन्होंने पक्षियों के बारे में हमें कुछ बताया ही। उसे समझने और समझकर कर्म करने की बारी हमारी है। अगर पक्षी विशेषज्ञों ने कहा है कि हमें अपने छत पर या मुंडेर पर गर्मी के दिनों में दाना-पानी रखना चाहिए तो रखना चाहिए। इससे प्रकृति का ही भला होगा। प्रकृति में एक सिस्टम बना हुआ है। उस सिस्टम को तोड़ने की कोशिश हमें नहीं करनी चाहिए। जिन लोगों ने चंद सिक्कों की खनक से वशीभूत होकर उस सिस्टम को तोड़ा है, हमें उसे जोड़ने का भी प्रयास करना चाहिए।

एक तथ्य यह भी है कि अब पूर्वी सिंहभूम के विभिन्न तालाबों में साइबेरियन एवं अन्य पक्षियों का आना कम हुआ है। यह गंभीर बात है। तालाब सूख रहे हैं। नदियां सिकुड़ रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण गर्मी जरूरत से ज्यादा, ठंड भी जरूरत से ज्यादा और बारिश भी हद से ज्यादा हो रही है। अर्थात्, जो पहले का सिस्टम था, वह टूट गया है। इसे सुधारना होगा। यह काम हमें ही करना होगा। नये तालाब बनें। नदियां जो सिकुड़ रही हैं, वह कैसे चौड़ी हों, इस पर भी विद्वानों को सोचना होगा। तभी आपको विदेशी सैलानी के रूप में महीनों गुजारने वाली पक्षियों के दर्शन हो सकेंगे।

इस अंक में इतना ही। अपना फीडबैक जरूर दें।

आपका ही

(अंशुल शरण)

3

ग्लोबल वार्मिंग का मुकाबला करने हेतु मनाया जाता है आर्द्रभूमि दिवस

विश्व आर्द्रभूमि दिवस प्रत्येक साल 2 फरवरी को पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य ग्लोबल वार्मिंग का सामना करने में आर्द्रभूमि जैसे दलदल तथा मंग्रोव के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना है। आर्द्रभूमि दुनिया के कुछ सबसे नाजुक और संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र हैं, जो पौधों और जानवरों के लिए अद्वितीय आवासों का समर्थन करते हैं तथा दुनिया भर में लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करते हैं। इस दिवस का आयोजन लोगों और हमारे ग्रह हेतु आर्द्रभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने हेतु किया जाता है।

युगांतर प्रकृति नेटवर्क

विश्व आर्द्रभूमि दिवस थीम 2025

हर साल डब्ल्यूडब्ल्यूडी को आर्द्रभूमि के मूल्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक विशिष्ट विषय के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष की थीम है: हमारे साझा भविष्य के लिए आर्द्रभूमियों का संरक्षण। इस साल का अभियान लोगों को आर्द्रभूमि के समर्थन में कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करने पर है। आर्द्रभूमि गायब हो रही है और हमें वित्तीय, मानव और राजनीतिक संसाधनों का उपयोग करके उनके संरक्षण और बहाली में संलग्न होने की आवश्यकता है।

यह दिवस पहली बार कब मनाया गया?

विश्व आर्द्रभूमि दिवस पहली बार 02 फरवरी, 1997 को रामसर सम्मलेन के 16 वर्ष पूरे होने पर मनाया गया था। यह दिवस साल 1997 से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। नमी या दलदली भूमि वाले क्षेत्र को आर्द्रभूमि या वेटलैंड कहा जाता है।

यह दिवस 2 फरवरी को ही क्यों मनाया जाता है?

दरअसल, दो फरवरी, 1971 को कैस्पियन सागर के तट पर ईरानी शहर रामसर में वेटलैंड्स पर कन्वेंशन को अपनाते की तारीख को चिह्नित करने हेतु यह दिवस मनाया जाता है। विश्व आर्द्रभूमि दिवस पहली बार साल 1997 में मनाया गया था।

आर्द्रभूमि क्या है?

आर्द्रभूमि एक ऐसा स्थान है, जहां पौधे और पशु-प्राणियों की घनी विविधता पाई जाती है और ये जैव विविधता से भी समृद्ध होता है। ये ऐसे भूमि क्षेत्र हैं जो हमेशा या मौसम में संतृप्त या जलमग्न रहते हैं। आर्द्रभूमि जल को प्रदूषण से मुक्त बनाती है। आर्द्रभूमि वह क्षेत्र है, जो सालों भर आंशिक रूप से या पूर्णतः जल से भरा रहता है। भारत में आर्द्रभूमि ठंडे एवं शुष्क इलाकों से लेकर मध्य भारत के कटिबंधीय मानसूनी इलाकों तथा दक्षिण के नमी वाले इलाकों



तक फैली हुई है। आर्द्रभूमि को मीठे पानी, तटीय और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र दोनों के रूप में परिभाषित किया जाता है और इसमें सभी झीलें और नदियां, दलदल, दलदली भूमि, पीटलैंड, मुहाना, डेल्टा, ज्वारीय मैदान, मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियां और भूमिगत जलभृत शामिल हैं। ये क्षेत्र लोगों और प्रकृति के लिए उनके आंतरिक मूल्य और उनके लाभों और सेवाओं दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो मानव कल्याण और सतत विकास में योगदान करते हैं। आर्द्रभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद वे गिरावट, हानि और गिरावट की सबसे अधिक दर वाले पारिस्थितिकी तंत्रों में से हैं। आर्द्रभूमि जंगलों की तुलना में तीन गुना तेजी से गायब हो रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2 फरवरी को विश्व आर्द्रभूमि दिवस के रूप में नामित किया है। इस दिवस का उद्देश्य लोगों और ग्रह के लिए आर्द्रभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है। यह दिवस 2 फरवरी 1971 को कैस्पियन सागर के तट पर ईरानी शहर रामसर में आर्द्रभूमि पर कन्वेंशन को अपनाते की तिथि को भी चिह्नित करता है। ■

विद्या एस

पहली बार बर्ड फेस्टिवल के आयोजन से लोगों को उम्मीद जगी कि भविष्य में दलमा और आसपास में पक्षियों को संरक्षण मिलेगा तो उनकी संख्या में भी बढ़ोतरी होगी। जमशेदपुर वन प्रमंडल के डीएफओ सबा आलम अंसारी का कहना है कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं को प्रकृति से जोड़ना था। इस दौरान आसपास के स्कूल-कॉलेजों के विद्यार्थियों और ग्रामीणों को महोत्सव से जोड़ना था। इस तरह के आयोजन हर साल किए जाएंगे। विद्यार्थियों में जागरूकता आएगी तो वे अपने घर के लोगों को भी जागरूक करेंगे। लोगों ने बर्ड फेस्टिवल में चिड़ियों के बारे में जानने के बाद उनके अंदर उत्सुकता देखी गई। जब उन्हें पता चला कि चिड़ियों की पहचान कैसे करनी है, उन्हें कैसे संरक्षण देना चाहिए। लोगों को सलाह दी गई कि अपने घरों की छत पर पानी और दाना रखें तो चिड़ियों को संरक्षण मिलेगा। उनका शिकार न करें और न ही उन्हें परेशान करें। इस बात की उम्मीद की जा सकती है कि निकट भविष्य में दलमा और आसपास के लोगों में जागरूकता आएगी तो प्रवासी पक्षियों की तादाद बढ़ेगी।

दलमा में तीन दिन तक चले वन महोत्सव में देश भर के सात राज्यों- ओडिशा, जम्मू-कश्मीर, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र से आए पक्षी विशेषज्ञों और विभिन्न कॉलेजों-स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बर्ड वाचर ने दलमा वन क्षेत्र में विभिन्न दुर्लभ पक्षियों की खोज की और उनकी तस्वीरें लीं। इनमें क्रेस्टेड ट्रीस्विफ्ट (मेल-फिमेल), ब्रोन

हेडेड बारबेट, क्रिमसन सनबर्ड, साइबेरियन रूबीथ्रोत, रेड अवदावत, मोटेड वूड उल्लू और ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल, ब्लैक नेकड मोनार्क नामक पक्षी दलमा में पाए गए। इन दुर्लभ पक्षियों की संख्या पूरे विश्व में 15 से 35 हजार के बीच है। ये पक्षी दलमा के अंदर तालाब के आसपास देखे गए।

बच्चों ने पहचान करना सीखा

बर्ड वाचिंग के दौरान स्कूली बच्चों को बर्ड वाचर ने पक्षियों की पहचान आवाज के आधार पर करने के बारे में बताया। इसके अलावा पक्षियों के रहन-सहन, खानपान और उनके व्यवहार के बारे में भी जानकारी दी गई। इसी तरह पेड़ की टहनियों पर शिकार करना वाले चील और बाज, किस पेड़ पर कौन से पक्षी आते हैं, यह भी बताया गया।

मिमिक्री करते हैं ब्लैक ड्रैगो

बर्डिंग करने वाले प्रोसेनजीत सरकार ने बताया कि दलमा में ब्लैक ड्रैगो अत्यधिक संख्या में हैं, जो मिमिक्री करते हैं। दूसरी प्रजाति की चिड़ियों जैसी आवाज निकालकर उसे भोजन तक मंगवा लेते हैं। इंसानों की आवाज तक निकाल लेते हैं, भले ही वे उसे शब्द में तब्दील नहीं कर पाते हैं।

बर्ड सेंचुरी के तौर पर विकसित हो सकता है चांडिल डैम

देशी-विदेशी पक्षियों के प्रवास को पर्यटन से जोड़ने के लिए चांडिल डैम को विकसित करने की बहुत दिनों से योजना बनाई जा रही है। एक

दलमा और आसपास के जलाशयों के पास रंगीन चहचहाती पक्षियों को देख लोग खूब इठलाते रहते थे। लेकिन, उन्हें पक्षियों की प्रजाति के बारे में कोई जानकारी नहीं रहती थी। पहली बार दलमा में बर्ड फेस्टिवल से लोगों में पक्षियों को पहचानने की क्षमता विकसित की। स्कूली बच्चों को पक्षियों की प्रजाति और उनके स्वभाव और खानपान के बारे में जानकारी मिली। अभी तक दलमा एलिफेंट सेंचुरी के तौर पर ही जाना जाता था, लेकिन अब दुर्लभ पक्षियों का बसेरा के तौर पर भी जाना जाएगा।

दलमा में दुर्लभ पक्षियों का बसेरा



दशक से वन विभाग में चर्चा तो हो रही, लेकिन अभी तक योजना नहीं बन पाई है। सीतारामपुर डैम और डिमना डैम जैसे जलाशयों में कई तरह के पक्षियों को देखकर सैलानी उत्साहित होते हैं। जलाशय का परिवेश और आबोहवा देशी एवं विदेशी पक्षियों के अनुकूल है। इसकी वजह से यहां अक्टूबर से फरवरी के बीच में सैकड़ों प्रजातियों के पक्षी अपना डेरा डालते हैं।

हजारों किलोमीटर से आते हैं प्रवासी पक्षी

कोलकाता के बर्ड एक्सपर्ट केशव गांगुली कहते हैं कि 25 साल से चांडिल और सीतारामपुर डैम के पास प्रवासी पक्षी आ रहे हैं। कई देशों से हजारों किलोमीटर से उड़कर यहां विदेशी पक्षी आते हैं। वो हमारे जलाशय पर ठहरते हैं। जिस तरह से

हमारी संस्कृति में यह कहा गया है कि अतिथि देवो भवः, ठीक उसी प्रकार इस जलाशय स्थल पर आने वाले हजारों की तादाद में विदेशी पक्षी भी हमारे लिए अतिथि हैं और उनका संरक्षण करना हमारा काम है। पक्षियों का संरक्षण बहुत ही जरूरी है। जिस प्रकार जलवायु परिवर्तन हो रहा है, यह पक्षियों के लिए अनुकूल होता है लेकिन कई लोग हैं जो पक्षियों को पकड़ लेते हैं या फिर उसका शिकार करते हैं, जिसे रोकना है। पक्षियों को सुरक्षित रखने के लिए पक्षी महोत्सव मनाया जा रहा है। संकल्प लेना चाहिए कि यहां पर आने वाले पक्षियों को हमलोग सुरक्षा प्रदान करें जिससे पर्यावरण और पक्षियों को संरक्षण मिल सके और इसका फायदा यहां के लोगों को मिलेगा।

युवाओं में देखा गया उत्साह

बर्ड फेस्टिव में शोधार्थियों और स्कूली बच्चों के अलावा ऐसे भी युवकों-युवतियों ने हिस्सा लिया, जो पक्षियों को पहचानने में दिलचस्पी रखते हैं। इनमें रांची एंजल पॉल और यज्ञसैनी को बर्ड फेस्टिव जिज्ञासु के तौर पर क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षक और चाईबासा के डीएफओ आदित्यनारायण ने उन्हें सम्मानित किया। एंजल पॉल रांची की रहने वाली हैं, जबकि याज्ञसैनी जमशेदपुर की रहने वाली हैं लेकिन वह बेंगलुरु में फैशन डिजायनिंग का कोर्स करती हैं। यज्ञसैनी सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक सत्यजीत सिंह की बेटी हैं, लेकिन पक्षियों की प्रजाति और उनके व्यवहार के बारे में जानने में काफी दिलचस्पी रखती हैं। युवाओं को उदाहरण के तौर पर इन दोनों के बारे में बताया गया।

पर्यटकों में होगी बढ़ोतरी

बर्ड एक्सपर्ट प्रोसेनजीत सरकार और डॉ. शम्स परवेज खान बताते हैं कि बर्ड फेस्टिव से दलमा चर्चाओं में आ चुका है। प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक आ रहे हैं। यदि हमलोग पक्षियों के संरक्षण में अपना अहम योगदान दे तो आने वाले समय में कई देशों से भी साइबेरियन पक्षी आएंगे और धीरे-धीरे इसकी लोकप्रियता अन्य देशों में भी फैलेगी। पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो हमलोग प्लास्टिक के वस्तुओं का उपयोग नहीं करें और अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाएं। ■



पक्षी महोत्सव

इधर पन्ना जी ने आवाज दी उधर पक्षी ने रिस्पांड किया

■ दलमा से लौट कर प्रियंका झा

दलमा का पहला पक्षी महोत्सव, दलमा के डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर सबा आलम अंसाटी द्वारा आयोजित किया गया। इसमें मुझे भी बच्चियों के साथ शामिल होने का मौका मिला। मेरे विद्यालय की बच्चियों को इसमें इसलिए शामिल होने का मौका मिला, क्योंकि विद्यालय पक्षी संरक्षण के विषय में इको क्लब द्वारा कार्य छात्राओं द्वारा ही करता है। यही छात्राएं घोंसलों का निर्माण करते हैं। यही पक्षियों की गणना करने में भी मदद करती हैं। यही छात्राएं बर्ड वाचिंग एक्टिविटी में भी इवॉल्व रहती हैं। इन सबको देखते हुए बच्चियां दलमा पक्षी महोत्सव में जाना चाहती थीं लेकिन सरस्वती पूजा होने के कारण सिर्फ आठ बच्चियों का ही चयन किया।

सभी बच्चियों ने अपने-अपने अभिभावक से अनुमति ली और इस महोत्सव में शामिल होने के लिए दो फरवरी को रवाना हुईं। हम लोगों ने एक वाहन किराये पर लिया। विद्यालय स्तर पर एक शिक्षक ने साथ दिया। फिर हम सभी अनंत आशाओं के साथ, अपार ऊर्जा और खुशी के साथ दलमा पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किये। मैंने यह प्रयास किया कि सभी बच्चियों को सही समय पर जानकारी मिल सके। दलमा के गेट से नीचे से ऊपर की तरफ जाते समय एक छोटी सी गिलहरी (जो लाल रंग की थी) से मुलाकात हुई। पहली बार जंगल में इस तरह घूमने का अनुभव प्राप्त हुआ। गिलहरी जंगल के फलों को पत्ते के पीछे नोंच कर, कुतर कुतर कर खा रही थी।

आगे बढ़ते हुए गाना गाते हुए सवारी करने की धुन में बच्चों के संग हम लोग गेस्ट हाउस पहुंचे। वहां मिस्टर अग्रवाल, जो दलमा के फॉरेस्टर हैं, उन्होंने हम सभी का स्वागत किया और हमें गेस्ट हाउस के भीतर ले गए।

प्राकृतिक तोता



रॉबिन एग





हमने इतने पक्षी देखे

फिर बच्चियों ने वह घूमना शुरू किया। उनके लिए ये पहली यात्रा थी। पहली बार बच्चियां सुदूर ग्रामीण इलाकों से निकल कर शहर से गुजरती हुई पर्वत पर बने गेस्ट हाउस में रुकी थीं। कार्यक्रम शुरू होने में समय था तो ओपन जिम में सभी दौड़ कर चली गईं। ये कभी ओपन जिम में जाती थीं तो कभी बम्बू हाउस में।

सारस के जोड़े के साथ फोटो-वीडियो बनाते हुए बच्चियां हरी घास पर नंगे पांव दौड़ने लगीं। तभी एक बड़ी गाड़ी में वहां के अफसरान आने शुरू हुए। सभी को निर्देश दिया गया कि कैफेटेरिया में जाकर नाश्ता कर लें। नाश्ते का शानदार व्यवस्था थी। सभी ने पूड़ी-कचौड़ी और गरमा-गरम घुघनी के साथ नाश्ता शुरू किया। नाश्ते के उपरांत सभी पहले से तय अपनी सीटों पर बैठ गईं। सभी अफसरान आए। डीएफओ श्री आलम ने सबका पुष्पगुच्छ देकर कैरमकदम किया। फिर सबके द्वारा बर्ड वाचिंग एक्टिविटी और झारखंड का पहला बर्ड फेस्टिवल करवाने के लिए डीएफओ की सराहना की गई। इन कार्यों के बाद पन्ना जी द्वारा टेक्निकल सेशन बर्ड कॉलिंग की शुरू की गई। इस सेशन में पन्ना जी ने हम लोगों को बारह पक्षियों की आवाजें सुनाईं। हम लोग चकित थे। हद तो तब हो गई, जब हमने देखा कि कोई दूर एक पंछी बैठा था। यह बात पन्ना जी को पता लगी तो उन्होंने हम सभी को शांत रहने का इशारा किया और कहा कि मैं अभी मैं उस पंछी को बताऊंगा कि मैं यहां हूँ। फिर पन्ना जी ने पक्षियों की भाषा में बात करनी शुरू की। उन्होंने आवाज निकाली और उसके रिस्पांस में दूर बैठे पक्षी ने भी रिस्पांस दिया। फिर क्या था। पन्ना जी और पक्षी आपस में बात करने लगे। हम लोगों को कुद पर भरोसा नहीं हो रहा था। पन्ना जी जैसे ही आवाज देते थे, दूर से आवाज आती थी पक्षी की। हम सभी ने पन्ना जी के लिए खूब तालियां बजाईं। इसके बाद टेक्निकल राउंड का आयोजन था। तीन टीमें बनाई गई थीं। सबसे पीछे उस टीम को रखा गया, जो पहली बार बर्ड वाचिंग एक्टिविटी में भाग ले रही थी। दूसरी टीम में उन्हें रखा गया, जो थोड़ी बहुत बर्ड वाचिंग या पक्षियों के बारे में जानकारी रखती थी। पहली टीम में उन्हें स्थान मिला, जिसमें लोगों ने कुछ काम किया हो।

थोड़ी देर के बाद लड़कियों ने जिद मचाया कि उन्हें जंगल सफारी करनी है। मैंने अग्रवाल जी से आग्रह किया। हमें गाड़ी दी गई। पूरी टीम गाड़ी में बैठ गई। मैंने महसूस किया, बच्चियों को सफारी में आनंद आ रहा था। बच्चियों ने जंगल में लाल गिलहरी, लाल मुंह वाला बंदर, पहाड़ी गाय, जंगली सूअर तथा अनगिनत पक्षी देखे। ■

रेड जायंट स्क्वायरल



मोणार्क



झोंगो



बबैट



लिटिल कोरमोरंट



प्लम हेडेड पैराकीट



हाइट श्रोटेड किंगफिशर



क्रेस्टेड मैपेट ईगल



कॉपर स्मिथ बारबेट



ब्लू श्रोटेड बारबेट



कॉमन लोरा



ब्लू कैप रॉक थ्रश



टिकल्स थ्रश



हाइट रम्प थामा



ब्राउन हेडेड बारबेट



तापमान बढ़ने से घट रही प्रवासी पक्षियों की संख्या

कोल्हान के जलाशयों में सर्दियों की दस्तक के साथ ही प्रवासी पक्षियों का आगमन शुरू हो जाता है। ये पक्षी न केवल कोल्हान के जलाशयों बल्कि, झारखंड के विभिन्न जलाशयों में भी नजर आते हैं। कोल्हान के चांडिल, सीतारामपुर डैम, बुरुडीह सहित अन्य जलाशयों में हर साल ये पक्षी अपनी सुंदरता से लोगों को आकर्षित करते हैं। हाल के कुछ वर्षों में इन पक्षियों की उपस्थिति में कमी देखी गई है, जो चिंता का विषय बनता जा रहा है। पहले जहां 10 से 12 प्रजातियों के पक्षी चांडिल और आसपास के इलाकों में आते थे, वहीं अब उनकी संख्या में गिरावट आई है। ये पक्षी आमतौर पर 3 से 4 महीने यहां बिताते थे, ठंड के दौरान प्रजनन के बाद अपने नवजात बच्चों के साथ वापस लौट जाते थे। हालांकि, इस साल चांडिल में मात्र 4 प्रजातियां ही पहुंच पाई हैं।

एस. विद्यासागर

प्राकृतिक असंतुलन और शिकार मुख्य कारण

प्रवासी पक्षियों की घटती संख्या के पीछे विशेषज्ञों ने दो मुख्य कारण बताए हैं। शिकार और प्राकृतिक असंतुलन। लोग बताते हैं कि इन पक्षियों का शिकार और पर्यावरणीय असंतुलन उनके आगमन को प्रभावित कर रहा है। पहले जहां 10 से 12 प्रजातियां नियमित रूप से आती थीं, अब केवल 4 प्रजातियां देखी जा रही हैं। इसबार पहुंचने वाली प्रजातियों में साइबेरियन डक, क्रैन, लिटिल ग्रेवी और ब्रह्माणी शामिल हैं। उनका मानना है कि यह समस्या गंभीर है और इसपर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है। दुनिया के कई हिस्सों में जहां वे यात्रा करते हैं या निवासी हैं। उनके अंडों का अवैध शिकार किया जाता है और उनका शिकार किया जाता है। प्रवासी पक्षियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों से अनजान स्थानीय लोग अक्सर पक्षियों के अस्तित्व के प्रतिकूल व्यवहार में लिप्त होते हैं। भुखमरी के कारण

पक्षियों के पूरे परिवार और आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करने वाले बच्चे की हानि हो सकती है। जल निकायों और जंगली आवासों के नुकसान के साथ-साथ, कस्बों और गांवों के आस-पास के छोटे-छोटे आवासों में कमी, जहां छोटे झुंड अक्सर शरण लेते हैं, एक प्रमुख चिंता का विषय है। बढ़ते अतिक्रमण और मानवीय हस्तक्षेप के कारण मछली पकड़ने में वृद्धि भोजन की उपलब्धता एक चुनौती बन जाती है और पक्षी भूख से मर जाते हैं।

संरक्षण की आवश्यकता

प्रवासी पक्षियों की घटती संख्या न केवल पर्यावरणीय असंतुलन का संकेत देती है, बल्कि स्थानीय जैव विविधता के लिए भी खतरा है। ऐसे में इन पक्षियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। चांडिल में साहेब पाटा बांध के पास इस बार पक्षी का चहचहाट सुनने के लिए लोग तरस गए हैं, जहां हर साल विदेशी पक्षियों से बांध रंगीन दिखता था।





प्रवासी पक्षियों की घटती संख्या के पीछे विशेषज्ञों ने दो मुख्य कारण बताए हैं। शिकार और प्राकृतिक असंतुलन। लोग बताते हैं कि इन पक्षियों का शिकार और पर्यावरणीय असंतुलन उनके आगमन को प्रभावित कर रहा है। पहले जहां 10 से 12 प्रजातियां नियमित रूप से आती थीं, अब केवल 4 प्रजातियां देखी जा रही हैं। इसबार पहुंचने वाली प्रजातियों में साइबेरियन डक, क्रैन, लिटिल ग्रेवी और ब्रह्मणी शामिल हैं।

नहीं मिल रहा संरक्षण

जानेमाने बर्डिंग प्रोसेनजीत सरकार का मानना है कि स्थानीय प्रशासन को मिलकर इन पक्षियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण तैयार करने की दिशा में प्रयास करना होगा। इस मुद्दे पर जागरूकता फैलाकर और संरक्षण योजनाओं को लागू कर हम प्रवासी पक्षियों की वापसी सुनिश्चित कर सकते हैं।

रहन-सहन में बदलाव भी पलायन का कारण है

बर्डिंग डॉ. शम्स परवेज खान का कहना है कि लोगों को जैसे जैसे रहन सहन में परिवर्तन हो रहा है। उसका प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ रहा है। पहले लोग अपने घरों के छत पर पानी और दाना रखते थे, तो चिड़ियों का आना जाना लगा रहा था। उन्हें आसानी से भोजन मिल जाता था। घरों में धान कुटाई होती थी। तो दाने बिखरे रहते थे, लेकिन वैसा कुछ भी नहीं है। भोजन का अभाव होने पर चिड़ियों का पलायन होने लगा तो कुछ विलुप्त होने लगी।

स्पीड बोटिंग से भी हो रहा प्रभावित

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय की शोधार्थी श्रावणी श्री बताती है कि जलाशयों में स्पीड बोटिंग के चलते भी पक्षियों का पलायन हो रहा है।

स्पीड बोटिंग की आवाज से पक्षियों की चैन में खलल पड़ जाती है। डीजल लीकेज से पानी दूषित हो जाता है। जिसके चलते पक्षी उन इलाकों से गायब हो जाते हैं। स्पीड बोटिंग की जगह सोलर बोटिंग की व्यवस्था करनी होगी। जिससे जलाशयों का पानी दूषित न हो और उसकी गति से ध्वनि न निकले।

टिड्डियों से बचाव, खेतों में खाद

प्रवासी पक्षी उस पारिस्थितिक तंत्र में कई आवश्यक और अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं। जिसमें वे रहते हैं और यात्रा करते हैं। ऐसे पक्षी जो बच्चे पैदा करते हैं, वे कीटों और अन्य जीवों को खाकर कीट नियंत्रण एजेंटों के रूप में काम करते हैं जो पर्यावरण और फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। टिड्डियों का हमला एक ऐसी आपदा है जो पक्षियों की अनुपस्थिति से उत्पन्न होती है। प्रवासी पक्षी बीजों के फैलाव में मदद करते हैं, जिससे उनके मार्गों पर जैव विविधता का रखरखाव होता है। बत्तखें मछली के अंडों को अपनी हिम्मत में नए जल निकायों में ले जा सकती हैं। पक्षियों के अंडों की बूंदें, जिन्हें गुआनो भी कहा जाता है, नाइट्रोजन से भरपूर होती हैं और जैविक उर्वरकों के रूप में कार्य करती हैं। अंडे के छिलके कैल्शियम और अन्य खनिजों को जोड़ सकते हैं। ■

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

संतोष कुमार गंगवार
राज्यपाल, झारखण्ड

गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
और जोहार

बड़े गर्व के साथ लोकतंत्र के उत्सव को मनाने का यह अवसर है। भारत का लोकतंत्र भारत का गणतंत्रिक अतीत बहुत ही समृद्ध रहा है। आइए, गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर हम संविधान में निहित आदर्शों और मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित कर देश एवं लोकतंत्र की प्रगति में योगदान दें।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, झारखण्ड सरकार



2024 : दिसंबर में ओडिशा के सिमलिपाल अभयारण्य से भटक कर एक बाघिन यहां पहुंची थी। चाकुलिया से लेकर घाटशिला तक इसका दहशत रहा। फिर यह पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर गयी, जहां से वन विभाग के अधिकारी उसे पकड़ कर ओडिशा ले गये। हालांकि, बाघिन ने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया।

2025 : जनवरी में एक बाघ को पहले सरायकेला-खरसावां जिले के कांडा और चौका के बीच तुलग्राम के जंगल एरिया में देखा गया। बाघ ने यहां एक बैल और बछिया का शिकार किया। इसके बाद वह पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर गया। लेकिन फिर से बंगाल से वह झारखंड में आया और जमशेदपुर से सटे एमजीएम थाना क्षेत्र और पटमदा के इलाके में विचरण करने के बाद फिर घाटशिला अनुमंडल क्षेत्र में चला गया। बाघ अब भी यहां विचरण कर रहा है।

देश में बाघों की संख्या बढ़ी, सबसे अधिक मध्य प्रदेश में

एक अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बीते एक दशक में बाघों की संख्या दोगुनी हो गयी है। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) के मुताबिक, भारत में 2010 से 2022 के बीच बाघों की आबादी 1706 से बढ़कर 3682 हो गयी है। इसके मुताबिक, दुनिया भर में जितने बाघ हैं, उनमें से 75 फीसदी भारत में ही हैं। भारत में सबसे अधिक बाघ मध्य प्रदेश में हैं। यहां बाघों की संख्या 785 है। भारत में दूसरे सबसे अधिक बाघों वाला राज्य कर्नाटक है। यहां 563 बाघ हैं। तीसरे स्थान पर उत्तराखंड है। यहां 560 बाघ हैं। चौथे नंबर पर महाराष्ट्र है, जहां 444 बाघ हैं। ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल में भी बाघों की संख्या बढ़ी है।

दलमा में पहले भी थे बाघ, इसलिए अब आ रहे : जीव कल्याण बोर्ड

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज के प्राचार्य और जीव कल्याण बोर्ड के सदस्य डॉ अमर सिंह ने बताया कि बाघ पहले भी दलमा में थे। यह इतिहास में दर्ज है। कई बार बाघों का मूवमेंट हुआ है। यही वजह है कि बाघ आ रहे हैं। बाघों का आना यहां के बेहतर आबोहवा का द्योतक भी है। लेकिन जन-सुरक्षा के साथ बाघों का संरक्षण भी करना होगा। इसके लिए नीति बननी चाहिए।



सबा आलम अंसारी

वन विभाग के लिए बाघ का आना सुखद : डीएफओ

दलमा के डीएफओ सबा आलम ने कहा कि दलमा और कोल्हान के आसपास के जंगल बाघों के अनुकूल होने के कारण वे यहां आ-जा रहे हैं। यह हमारे लिए सुखद बात है। कोई डरने की बात नहीं है। जंगल बाघ का ही होता है। अगर वे आ रहे हैं, तो यह सुखद है। ■

अनुसार, दलमा में कभी बाघ और शेर थे। यहां 10 जगहों पर इनकी गुफाएं हैं। यही वजह है कि जब भी दलमा में जानवरों की गणना होती है, तो उसमें बाघ का भी एक कॉलम होता है।

दलमा से लेकर पूरा कोल्हान बाघों के लिए माकूल : पीसीसीएफ

झारखंड के वन विभाग के सर्वोच्च पदाधिकारी पीसीसीएफ सत्यजीत सिंह ने बताया कि दलमा समेत कोल्हान का पूरा इलाका हाथियों के माकूल माना जाता है। झारखंड की वादियां भी बाघों के अनुकूल है। पलामू टाइगर रिजर्व में नये बाघ देखने की सूचना है। छह बाघ यहां हैं। पहले इसकी संख्या पांच ही थी। कोल्हान में लगातार टाइगर की इंट्री पर उन्होंने कहा कि अक्सर वहां बाघ का मूवमेंट होता रहता है। सिमलिपाल से लेकर बंगाल से भी बाघ का मूवमेंट हो सकता है।

1970-80 के दशक तक देखे गये थे बाघ

दलमा को वर्ष 1975 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था। उस वक्त की रिपोर्ट के मुताबिक, यहां बाघ पाये जाते थे और 1980 के दशक में इक्के-दुक्के बाघ थे। चूंकि, जंगल और आसपास आबादी कम थी, तो उनका मूवमेंट होता था, लेकिन बाद में विलुप्त हो गये और हाथियों की संख्या बढ़ गयी।

दलमा और आसपास के जंगलों में बाघ कब-कब आये

2010 : रॉयल बंगाल टाइगर को डिमना के पास दलमा के तराई वाले एरिया में पानी पीते देखा गया था। करीब तीन दिन इलाके में रहने के बाद लौट गये थे।

2016 : ओडिशा के जंगलों से नर और मादा बाघ को दलमा में देखा गया था। इन बाघों ने यहां पालतू जानवरों का शिकार भी किया था।

2019 : पश्चिम बंगाल से एक बाघिन आयी थी। करीब एक सप्ताह तक विचरण करने के बाद लौट गयी।

टाइगर को भा रहा है दलमा!

दलमा वन्यजीव अभयारण्य और आसपास के जंगल शुरु से ही बाघों के लिए पर्यावास (जीवों के रहने के लिए प्राकृतिक वातावरण वाला स्थल) रहा है। 70-80 के दशक में दलमा में बाघों की अच्छी खासी संख्या थी। बाद के दिनों में बाघ विलुप्त-से हो गये। बीते दो-तीन महीने से बाघों का बार-बार दलमा और आसपास के जंगलों में आना यह संकेत दे रहा है कि यहां बाघों के लिए अनुकूल परिस्थितियां बन रही हैं। दरअसल, दलमा और कोल्हान के जंगल बाघों को भा रहे हैं और आनेवाले समय में फिर से दलमा में बाघों का साम्राज्य हो सकता है। वन विभाग इसे सुखद घटना मान रहा है।

जमशेदपुर से ब्रजेश सिंह की रिपोर्ट

ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ में बढ़ी बाघों की संख्या

जानकारों के अनुसार, बाघ दलमा और आसपास के जंगलों में अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। यही वजह है कि पश्चिम बंगाल और ओडिशा से होते हुए कोल्हान के जंगलों में बार-बार आ-जा रहे हैं। एक गणना के मुताबिक, ओडिशा और झारखंड के अलावा छत्तीसगढ़ में भी बाघों की संख्या में बढ़ोतरी

हुई है। पश्चिम बंगाल के रास्ते कोल्हान में इंट्री के साथ इनका दायरा बढ़ा है। अब ये जमशेदपुर के आसपास तक पहुंच गये हैं। वन विभाग के अनुमान के मुताबिक, सिमलिपाल (ओडिशा) के जंगल और पलामू से भी बाघों का मूवमेंट यहां हो सकता है।

दलमा का वातावरण बाघों के प्रजनन के अनुकूल

विशेषज्ञों के अनुसार, दलमा का वातावरण बाघों के प्रजनन के अनुकूल है। हालांकि, अब तक गणना में यहां एक भी बाघ नहीं मिला है। वन विभाग के



कल्याणनगर और इंद्रानगर के 150 मकानों को तोड़ने का मामला: 17 मार्च को होगी सुनवाई

बड़बोले नेता गायब, अकेले सरयू राय लड़ रहे हैं एनजीटी में मुकदमा

जमशेदपुर के भुइयाडीह के कल्याणनगर और इंद्रानगर के 150 घरों को तोड़ने के बाबत जो बहस चली थी, अब उसका कोई नामलेवा नहीं। वह चुनाव का वक्त था और अपनी-अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने के लिए कुछ नेता इस बहस को आगे बढ़ा रहे थे और आरोप-प्रत्यारोप के दौर से शहर के अखबार रंगे रहते थे।

तात्कालीन निर्दलीय विधायक सरयू राय का नाम कांग्रेस नेता डॉ. अजय कुमार ने जबरिया इसमें डाल दिया था। यह तथ्य है कि इंद्रानगर और कल्याणनगर के 150 मकानों को बचाने के लिए सरयू राय ने उस वक्त से जो लड़ाई शुरू की, वह अब तक जारी है। उन्होंने दिल्ली के वरिष्ठ अधिवक्ता संजय उपाध्याय को बाकायदा केस लड़ने के लिए राजी किया और इंद्रानगर-कल्याणनगर की जनता का घर ना टूटे, इसके लिए संजय उपाध्याय लगातार एनजीटी (राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण) में अपना पक्ष रख रहे हैं। अब इस

मामले में 17 मार्च 2025 को अगली सुनवाई होगी।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

सात माह पहले जमशेदपुर के तथाकथित बड़े-बड़े नेता बस्तीवासियों से मिल रहे थे और उन्हें आश्वासन कर रहे थे कि उनका घर नहीं टूटने देगे। कांग्रेस नेता डॉ. अजय कुमार ने भी कहा था कि वह एक भी मकान को टूटने नहीं देंगे। अब ये सब नेता गायब हैं। कोई बस्तीवासियों से मकान टूटने के मुद्दे पर चर्चा तक करना गंवारा नहीं समझता। सरयू राय पहले निर्दलीय थे और जमशेदपुर पूर्वी के विधायक थे। अब वह जनता दल (यूनाइटेड) में हैं और जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक हैं। देखा जाए तो विधानसभा बदल जाने के बाद उन्हें इस केस से कोई मतलब नहीं होना चाहिए था लेकिन पांच साल पूर्वी के विधायक रहने के बाद लोगों से किया गया कमिटमेंट उन्हें याद रहा और वह संजय उपाध्याय के मार्फत एनजीटी में इस मामले की सुनवाई से पूरी तरह जुड़े हुए हैं। यह बात दीगर है कि बड़े बोल बोलने वाले नेतागण अब कहीं नजर नहीं आते।

उस दौरान डॉ. अजय ने पहला आरोप यह लगाया कि केंद्रीय मंत्री रहते हुए अर्जुन मुंडा ने ही एनजीटी में शिकायत की थी और दलमा इको सिंसेटिव जोन के 150 मकानों को तोड़ने के बारे में आग्रह किया था। दूसरा आरोप यह लगाया कि चूँकि अर्जुन मुंडा और सरयू राय मित्र हैं, इसलिए सबकुछ जानते हुए भी सरयू राय चुप रहे। इस पर सरयू राय ने बाकायदा फेसबुक लाइव के माध्यम से स्वयंभू कांग्रेस नेता डॉ. अजय कुमार पर तीखा हमला किया और उन पर तथ्यों की गलत व्याख्या के आधार पर एक जबरदस्त बदनामी अभियान चलाने का आरोप लगाया। सरयू राय ने उस लाइव में कहा था कि डॉ. अजय कुमार के आरोप न केवल निराधार थे, बल्कि जनता को गुमराह करने का एक जानबूझकर किया गया प्रयास भी था। उन्होंने खुलासा किया कि अजय कुमार के दावे मुंडा द्वारा नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) को लिखे गए एक अंग्रेजी पत्र पर आधारित थे, जिसे कुमार ने वास्तव में कभी पढ़ा ही नहीं था। उन्होंने अजय कुमार की समझ और ईमानदारी पर सवाल उठाते हुए कहा था कि डॉ. अजय कुमार एक आईपीएस अधिकारी और कॉर्पोरेट कार्यकारी के रूप में अपनी सभी साख के साथ, पत्र की सामग्री को समझने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने कुमार को सार्वजनिक रूप से यह दिखाने की चुनौती दी कि मुंडा के पत्र में कहीं घरों को ध्वस्त करने का सुझाव दिया गया है? उन्होंने यह भी कहा था कि अजय कुमार सिर्फ राजनीतिक तमाशा बनाने के लिए राई का पहाड़ बना रहे हैं। ■

150 घरों को तोड़े जाने के विरोध में गठित इंद्रानगर-कल्याण नगर बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष संतोष गुप्ता ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में मामले की पैरवी करने वाले अधिवक्ताओं को वकालतनामा (कानूनी अधिकार) भेजा था जिसमें एनजीटी के अधिवक्ता मानसी बच्चानी, ईशा कृष्णा, डॉ. बीपी नीलरत्न, सौमित्र जायसवाल, शुभम उपाध्याय, गीतांजलि सान्याल और सूर्या गुप्ता को झुग्गीवासियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकृत किया गया था। यह कानूनी कदम तब के जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय और वरिष्ठ अधिवक्ता संजय उपाध्याय के बीच दिल्ली में हुई बैठक के बाद उठाया गया था, जिसमें इस बात पर चर्चा हुई थी कि मामले को आगे बढ़ाने के लिए वकालतनामा की आवश्यकता होगी। दरअसल, यह मामला जमशेदपुर स्थानीय नियोजन प्राधिकरण (जेपीएलए) द्वारा जारी नोटिस से जुड़ा है, जिसमें भुइयाडीह के कल्याण नगर, इंद्रानगर और छाया नगर के इलाकों में 150 से ज्यादा घरों को गिराने का निर्देश दिया गया था। 6 जुलाई 2024 को जारी किए गए इस नोटिस में निवासियों को 14 दिनों के भीतर अपने घर खाली करने और 20 जुलाई तक जवाब देने का निर्देश दिया गया था जिसमें बताया गया है कि उनके घरों को क्यों नहीं गिराया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय हरित अधिकरण के निर्देशों के बाद जल संसाधन विभाग, मानगो नगर निगम, जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति और जिला प्रशासन द्वारा किए गए संयुक्त सर्वेक्षण के आधार पर मकान ढहाने के आदेश दिए गए थे। विधायक सरयू राय ने निवासियों को आश्वासन दिया है कि वे उनके मकान नहीं ढहाने देंगे। इस दिशा में वह सतत कार्यशील हैं। संजय उपाध्याय एनजीटी में उनके आग्रह पर ही मुकदमा लड़ रहे हैं। ■

पूरा मामला क्या है

दरअसल, झारखंड सरकार के वन विभाग ने ऐसे 176 मकानों और दुकानों को नोटिस भेजा था, जिन्होंने दलमा इको सिंसेटिव क्षेत्र में निर्माण कार्य किया है। इन लोगों को अपना पक्ष रखने के लिए अगस्त में बुलाया गया था। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के आदेश पर यह कार्रवाई की जा रही है। जमशेदपुर वन प्रमंडल के अफसर सबा आलम अंसारी ने बताया था कि पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के तहत नोटिस जारी किया गया था। नोटिस में साफ लिखा है कि दलमा इको सिंसेटिव जोन की निगरानी समिति द्वारा लिए गए निर्णय के आलोक में पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम सुनवाई होगी। वन विभाग के कार्यालय में स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि के माध्यम से उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करना होगा, अन्यथा पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के तहत इको सिंसेटिव जोन की निगरानी समिति की ओर से नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह नोटिस झारखंड सरकार के वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की तरफ से जारी किया गया था। जिन लोगों को नोटिस मिला, उनमें एसएस इस्टेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, धनवंतरी डिस्ट्रीब्यूटर्स, मेसर्स ब्लूमन कंस्ट्रक्शन, एसपीजी इंटरप्राइजेज, जय माता दी इंटरप्राइजेज, एसटीपी लिमिटेड अलकतरा फैक्ट्री, दलमा हिल होटल, जगजीत होटल, मिथिला मोटर्स, सिल्वर सैंड रिजॉर्ट, गुरमित होटल, शुभेच्छा होटल, बेबको ट्रकिंग, आशियाना डिमना जैसे बड़े नाम शामिल हैं। ■





कभी भारत में पाये जाते थे शुतुरमुर्ग

शुतुरमुर्ग ऐसा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता। किताबों में हमने पढ़ा है कि यह केवल अफ्रीका में पाया जाता है। शुतुरमुर्ग की दो प्रजातियां जीवित हैं, एक सब-सहारन अफ्रीका में मिलती है और दूसरी हॉर्न ऑफ अफ्रीका में। हालांकि, नई खोज बताती है कि कभी भारत में भी शुतुरमुर्ग मौजूद थे। अंतरराष्ट्रीय आर्कियोलॉजिस्ट्स की एक टीम को दक्षिण भारत में शुतुरमुर्ग का घोंसला मिला है। यह घोंसला 41,000 साल से भी पुराना है और दुनिया में अब तक मिला सबसे पुराना शुतुरमुर्ग का घोंसला है। शुतुरमुर्ग का यह प्राचीन घोंसला आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले से मिला है। यहां की एक साइट पर जीवाश्मों की बहुलता है। वडोदरा स्थित एमएस यूनिवर्सिटी के आर्कियोलॉजिस्ट्स ने जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के सहयोगियों के साथ मिलकर यह खोज की। टाइम्स ऑफ इंडिया में छपी रिपोर्ट के अनुसार, इस घोंसले में शुतुरमुर्ग के 9-11 अंडे थे।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

भारत से क्यों विलुप्त हो गए शुतुरमुर्ग?

शोध के अनुसार, उनकी यह खोज यह पता करने में अहम है कि मेगाफौना भारत से क्यों विलुप्त हो गए। आमतौर पर, शुतुरमुर्ग का घोंसला 9-10 फीट चौड़ा होता है। उसमें एक साथ 30-40 अंडे रखे जा सकते हैं। आंध्र में 1x1.5 मीटर के क्षेत्र से शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों के लगभग 3,500 टुकड़ों की खोज हुई है। यह दक्षिण भारत में शुतुरमुर्ग की मौजूदगी का पहला सबूत है। यह पहली बार है, जब वैज्ञानिकों ने 41,000 साल पुराने शुतुरमुर्ग के घोंसले का सबूत पाया है। सभी बड़े जानवर (घोड़े, मवेशी, हाथी, हिप्पो इत्यादि) मेगाफौना के दायरे में आते हैं। करीब 40,000 साल पहले इनमें से कई दुनिया

के अलग-अलग हिस्सों से विलुप्त हो गए।

हजारों साल पहले भारत में पाए जाते थे शुतुरमुर्ग

एमएस यूनिवर्सिटी में आर्कियोलॉजी और प्राचीन इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर, देवारा अनिलकुमार के अनुसार, भारतीय हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों से सबसे पुराने शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके खोजे गए हैं। ये 20 लाख साल से भी ज्यादा पुराने हैं। प्रायद्वीपीय भारत में भी शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलकों का सबसे पुराना सबूत राजस्थान के कटोती में मिला था, जो 60,000 साल पुराना है। भारत से अलावा मंगोलिया और चीन से भी शुतुरमुर्ग के जीवाश्म मिले हैं। आज की तारीख में शुतुरमुर्ग सिर्फ अफ्रीका के जंगलों में मिलते हैं। ■

शुतुरमुर्ग: कुछ तथ्य

शुतुरमुर्ग की गति: शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकते, लेकिन ज़मीन पर उनकी रफ़्तार से कोई पक्षी मुकाबला नहीं कर सकता। शुतुरमुर्ग दुनिया के सबसे तेज़ दौड़ने वाले पक्षी हैं! वैज्ञानिकों ने शुतुरमुर्गों को लगातार 30-37 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ते और 43 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ते देखा है। अपने लंबे, मजबूत पैरों की मदद से शुतुरमुर्ग एक ही कदम में 10 फीट से ज्यादा की दूरी तय कर सकते हैं। उनके पैर स्प्रिंग की तरह काम करते हैं, जो आगे बढ़ने पर कुशनिंग और शॉक एब्जॉर्बिंग प्रदान करते हैं। शुतुरमुर्ग की गति और शारीरिक रचना इतनी अनोखी है कि वैज्ञानिकों ने पक्षी से प्रेरित होकर यांत्रिक रोबोट पैर भी डिज़ाइन किए हैं।

शुतुरमुर्ग उड़ क्यों नहीं सकता: शुतुरमुर्ग छोटे उड़ान पंखों और चपटी उरोस्थि (छाती की हड्डी) के साथ भारी होते हैं। उड़ने वाले पक्षियों में उरोस्थि कील के आकार की होती है (जहाज के पतवार की तरह) और शक्तिशाली पंख की मांसपेशियाँ इससे जुड़ी होती हैं। उस कील की हड्डी के बिना एक पक्षी को उड़ान भरने के लिए मंजूरी नहीं दी जा सकती है, इसलिए शुतुरमुर्ग जमीन पर ही रहते हैं।

शुतुरमुर्ग का अंडा कितना बड़ा होता है: एक औसत शुतुरमुर्ग के अंडे का वजन लगभग 3 पाउंड (लगभग दो दर्जन मुर्गी के अंडों के बराबर!) होता है और यह लगभग 6 इंच लंबा होता है। जंगल में, शुतुरमुर्ग के घोंसले सामूहिक होते हैं; कई शुतुरमुर्ग एक ही घोंसले में अपने अंडे देते हैं। फिर, एक नर और एक मादा बारी-बारी से अंडों को सेते हैं।

शुतुरमुर्ग का घोंसला: शुतुरमुर्ग का पूरा घोंसला 9-10 फीट चौड़ा हो सकता है, जिसमें अंडे एक छोटे से क्षेत्र में एकत्र किए जाते हैं ताकि शुतुरमुर्ग उन्हें

शुतुरमुर्ग पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

शुतुरमुर्ग पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ कुछ तरीके हैं जिनसे वे पर्यावरण की रक्षा करते हैं:

1. कीट नियंत्रण: शुतुरमुर्ग कीटों को खाकर उनकी संख्या को नियंत्रित करते हैं, जिससे फसलों को नुकसान नहीं पहुँचता है।
2. मिट्टी की उर्वरता: शुतुरमुर्ग का मल मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है, जिससे पौधों की वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।
3. जैव विविधता: शुतुरमुर्ग के आवास में जैव विविधता को बनाए रखने में मदद मिलती है, क्योंकि वे विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों के साथ सहअस्तित्व में रहते हैं।
4. पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन: शुतुरमुर्ग पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं, क्योंकि वे शिकारी और शिकार दोनों की भूमिका निभाते हैं।



अपने शरीर से ढक सके। एक घोंसले में 30-40 अंडे हो सकते हैं, लेकिन शुतुरमुर्ग एक बार में केवल 20 अंडे ही सेते हैं। अतिरिक्त अंडे अक्सर घोंसले से बाहर निकल जाते हैं।

जंगली में शुतुरमुर्ग कहां पाए जाते हैं: शुतुरमुर्ग की दो प्रजातियाँ हैं। वे दोनों अफ्रीका में रहते हैं। आम शुतुरमुर्ग आमतौर पर सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में और पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में पाए जाते हैं। सोमाली शुतुरमुर्ग सोमालिया, इथियोपिया, डिज्बुटी और केन्या में पाया जाता है। शुतुरमुर्ग शुष्क, रेतीले आवासों में जीवित रह सकते हैं और आम तौर पर झाड़ियों, घास के मैदानों और सवाना में रहते हैं। फार्मों से छोड़े गए शुतुरमुर्ग ऑस्ट्रेलिया में स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाली आबादी के रूप में जीवित बचे हैं, लेकिन ये पक्षी ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप के मूल निवासी नहीं हैं।

शुतुरमुर्ग क्या खाते हैं: शुतुरमुर्ग मुख्य रूप से पत्तेदार साग, फूलदार पौधे, जड़ें, घास और रसीले पौधे खाते हैं। वे कभी-कभी गिरे हुए फल खाते हैं या चूहे, मेंढक और कीड़े-मकौड़े, टिड्डे और टिड्डियाँ खाते हैं। स्मिथसोनियन नेशनल जू का शुतुरमुर्ग विटामिन और पोषक तत्वों से भरपूर फल, कीड़े और छरें खाता है। उसका पसंदीदा भोजन पत्तेदार सब्जियाँ हैं।

शुतुरमुर्ग का वजन कितना होता है: आम शुतुरमुर्ग दुनिया का सबसे बड़ा जीवित पक्षी है। वयस्क शुतुरमुर्ग का वजन 250 से 300 पाउंड के बीच होता है और इसकी लंबाई 9 फीट तक हो सकती है, हालांकि मादाएं नर से छोटी होती हैं।

शुतुरमुर्ग और एमु में क्या अंतर है: एमु और शुतुरमुर्ग दोनों ही उड़ने में असमर्थ पक्षियों के समूह के सदस्य हैं, जिन्हें

शुतुरमुर्ग मुख्य रूप से पत्तेदार साग, फूलदार पौधे, जड़ें, घास और रसीले पौधे खाते हैं। वे कभी-कभी गिरे हुए फल खाते हैं या चूहे, मेंढक और कीड़े-मकौड़े, टिड्डे और टिड्डियाँ खाते हैं। स्मिथसोनियन नेशनल जू का शुतुरमुर्ग विटामिन और पोषक तत्वों से भरपूर फल, कीड़े और छरें खाता है। उसका पसंदीदा भोजन पत्तेदार सब्जियाँ हैं।

रैटाइट्स के नाम से जाना जाता है। इस समूह में रियास, कैसोवरी, कीवी और कुछ विलुप्त प्रजातियाँ भी शामिल हैं। एक बार जब आप जान जाते हैं कि आपको क्या देखना है, तो शुतुरमुर्ग और इमू में अंतर करना आसान है। इमू ऑस्ट्रेलिया में रहते हैं और शुतुरमुर्ग से छोटे होते हैं। उनके प्रत्येक पैर में तीन पंजे होते हैं, जबकि शुतुरमुर्ग के केवल दो होते हैं। इमू की गर्दन पर भी पूरे पंख होते हैं, जबकि शुतुरमुर्ग के पास पतले पंखों की केवल एक पतली परत होती है जिससे उसका सिर और गर्दन नंगी दिखाई देती है।

शुतुरमुर्ग अपनी रक्षा कैसे करता है: शेर, चीते, तेंदुए और लकड़बग्घे शुतुरमुर्गों का शिकार करते हैं और उनके अंडों को खाते हैं। शुतुरमुर्ग की रक्षा की पहली पंक्ति तेज़ और दूर तक भागना है। अगर चूजों की रक्षा करनी है या भागना कोई विकल्प नहीं है, तो शुतुरमुर्ग शक्तिशाली किक से शिकारियों को रोकते हैं। उनके पैरों पर लगे तीखे पंजे नुकसानदायक प्रहार कर सकते हैं। शुतुरमुर्ग

अपने शरीर का इस्तेमाल शिकारियों को ज़मीन पर गिराने के लिए मेढ़े की तरह भी कर सकता है।

क्या शुतुरमुर्ग सचमुच अपना सिर रेत में दबाता है: नहीं, यह एक आम गलतफ़हमी है। शुतुरमुर्ग ज़मीन में अपना घोंसला बनाते हैं और कभी-कभी अपने अंडों को देखने या हिलाने के लिए अपना सिर अंदर डालते हैं। इसके अलावा, जब शुतुरमुर्ग को लगता है कि कोई खतरा आ रहा है, तो वे नीचे लेट सकते हैं और अपनी लंबी गर्दन को ज़मीन पर दबा सकते हैं ताकि वे कम दिखाई दें। इन दोनों व्यवहारों के कारण यह मिथक बना है कि शुतुरमुर्ग अपना सिर रेत में दबाते हैं। ■



फरवरी में बढ़ेगी गर्मी, गेहूं सहित अन्य फसलों को नुकसान संभव

फरवरी 2025 के दौरान देश के अधिकांश इलाकों में न्यूनतम तापमान के सामान्य से अधिक रहने के आसार हैं, सिवाय उत्तर-पश्चिम भारत और भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप के कुछ हिस्सों, जहां न्यूनतम तापमान के सामान्य रहने की संभावना जताई गई है। वहीं, उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों में शीत लहर वाले दिनों की संख्या सामान्य से कम रहने का पूर्वानुमान है। फरवरी के महीने में देश के कई इलाकों में अधिकतम तापमान के सामान्य से अधिक रहने की आशंका है, वहीं, पश्चिम मध्य भारत और भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप के कुछ हिस्सों, जहां अधिकतम तापमान के सामान्य से कम रहने की संभावना है जताई गई है।

कम बारिश और अधिक तापमान का खेती पर बुरा असर

फरवरी में सामान्य से कम बारिश और सामान्य से अधिक तापमान का खेती पर गहरा असर पड़ने का अंदेशा जताया गया है। उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों में सामान्य से कम बारिश और उच्च तापमान की वजह से गेहूं जैसी खड़ी फसलों पर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ सकता है। गेहूं की फसल अभी फूलने और दाने आने के चरण में हैं।

सरसों और चना जैसी फसलें भी समय से पहले पक सकती हैं, जाहिर है समय से पहले पकने से पैदावार व गुणवत्ता दोनों में कमी आने की आशंका है जबकि सेब और अन्य शीतोष्ण गुठलीदार फलों जैसी बागवानी फसलों में बढ़ते तापमान के कारण समय से पहले कली टूटने की आशंका जाहिर की गई है और जल्दी फूल आ सकते हैं, जिसकी वजह से फलों की गुणवत्ता खराब हो सकती है, पैदावार पर भारी प्रभाव तथा किसानों को नुकसान हो सकता है।

मौसम विभाग ने किसानों को सुझाव देते हुए कहा है कि फसलों पर कम बारिश और बढ़ते तापमान के बुरे प्रभाव को कम करने तथा फसल के विकास को बनाए रखने के लिए बीच-बीच में हल्की सिंचाई करें। हालांकि उत्तर



मौसम विभाग द्वारा जारी फरवरी महीने के आउटलुक के मुताबिक, पूरे देश में सामान्य से कम, यानी एलपीए के 81 फीसदी से कम बारिश होने की आशंका जताई गई है।

■ दयानिधि

प्रदेश और मध्य प्रदेश में अपेक्षित सामान्य या सामान्य से कम अधिकतम तापमान के कारण, फसलों पर शीत लहर का बुरा प्रभाव न के बराबर पड़ने की संभावना है।

कहां कितनी होगी बारिश?

फरवरी 2025 के दौरान उत्तर भारत के पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, तथा लद्दाख में बारिश के सामान्य से कम, यानी लंबी अवधि के औसत (एलपीए) के 78 फीसदी से होने के आसार हैं।

फरवरी महीने के कहां-कहां चलेगी शीत लहर?

फरवरी 2025 में देश में शीत लहर वाले दिनों की संख्या के सामान्य से कम रहने का पूर्वानुमान है। देश के अधिकांश हिस्सों में शीत लहर वाले दिन सामान्य सीमा के भीतर रहने की संभावना है। हालांकि उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ हिस्सों में शीत लहर वाले दिनों की संख्या के सामान्य से कम रहने की का अनुमान है।

प्रशांत और हिंद महासागरों पर एसाएसटी स्थितियां

वर्तमान में भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में ला नीना की कमजोर स्थितियां जारी हैं और मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान (एसएसटी) सामान्य से कम है। नवीनतम एमएमसीएफएस पूर्वानुमान से पता चलता है कि कमजोर ला नीना की स्थितियां अप्रैल 2025 तक बनी रहने का पूर्वानुमान है, जिसके बाद ईएनएसओ-तटस्थ स्थिति आगे बढ़ने की संभावना है। वहीं, हिंद महासागर पर तटस्थ हिंद महासागर डिपोल (आईओडी) स्थितियां बनी हुई हैं और नवीनतम एमएमसीएफएस पूर्वानुमान के मुताबिक, तटस्थ आईओडी स्थितियां अगले दो महीनों तक जारी रहने की संभावना है। ■



आर्द्रभूमि को बचाना बेहद जरूरी

आर्द्रभूमि, भूमि के ऐसे क्षेत्र हैं, जहां वर्ष के अधिकांश समय जल स्तर भूमि की सतह के पास या उससे ऊपर रहता है। मनुष्य और आर्द्रभूमि का संबंध प्राचीन है। सभ्यता के प्रथम लक्षण आर्द्रभूमि आवासों में पाए गए थे। जैसे सिंधु नदी के बाढ़ के मैदान, नील डेल्टा तथा टिगरिस और फरात नदियों के उपजाऊ अर्द्धचन्द्राकार क्षेत्र। आर्द्रभूमि पृथ्वी की भूमि सतह के लगभग 6% हिस्से को कवर करती है। कई प्रकार की आर्द्रभूमियाँ हैं जैसे दलदल, दलदल, लैगून, दलदल, दलदल और मैंग्रोव। वे कुछ सबसे समृद्ध, सबसे विविध और नाजुक प्राकृतिक संसाधनों का घर हैं। चूंकि वे विभिन्न प्रकार के पौधों और पशु जीवन को सहारा देते हैं, जैविक रूप से वे सबसे अधिक उत्पादक पारिस्थितिक तंत्रों में से एक हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

भारत की आर्द्रभूमियां

भारत में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में वितरित आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी प्रणालियों का खजाना है। भारत में अधिकांश आर्द्रभूमि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रमुख नदी प्रणालियों जैसे गंगा, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी और ताप्ती से जुड़ी हुई हैं। भारत में कुल 27, 403 आर्द्रभूमि हैं, जिनमें से 23,444 अंतर्देशीय आर्द्रभूमि हैं और 3,959 तटीय आर्द्रभूमि हैं। एशियाई वेटलैंड्स डायरेक्टरी (1989) के अनुसार, आर्द्रभूमि देश के 18.4% क्षेत्र (नदियों को छोड़कर) पर फैली हुई है, जिनमें से 70% पर धान की खेती होती है। भारत में अनुमानित 4.1 मिलियन हेक्टेयर (सिंचित कृषि भूमि, नदियाँ और झरनों को छोड़कर) आर्द्रभूमि में से 1.5 मिलियन हेक्टेयर प्राकृतिक हैं लगभग 80% मैंग्रोव पश्चिम बंगाल के सुंदरबन और

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में फैले हुए हैं, जबकि शेष ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात के तटीय राज्यों में फैले हुए हैं।

दक्षिणी प्रायद्वीपीय भारत में वेटलैंड्स ज्यादातर मानव निर्मित हैं और इन्हें येरिस (टैंक) के नाम से जाना जाता है। इन्हें हर गांव में बनाया जाता है और ये कई तरह की पक्षी-प्रजातियों के लिए घोंसले, भोजन और प्रजनन स्थल के रूप में काम करने के अलावा विभिन्न मानवीय जरूरतों के लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। तमिलनाडु में प्वाइंट कैलिमेरे, केरल में अष्टमुडी, सस्थमकोट्टा और वेम्बनाड कोल झीलें और आंध्र प्रदेश में कोलेरू झील दक्षिण भारत में कुछ प्राकृतिक वेटलैंड स्थल हैं।

भारत की आर्द्रभूमियों को आम तौर पर उनकी क्षेत्रीय उपस्थिति के आधार पर 8 श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

1. दक्षिण में दक्कन पठार के जलाशय, साथ ही दक्षिण-पश्चिमी तट के लैगून और अन्य आर्द्रभूमि।

2. राजस्थान, गुजरात और कच्छ की खाड़ी का विशाल खारा विस्तार।
3. गुजरात से पूर्व की ओर राजस्थान (केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान) और मध्य प्रदेश तक मीठे पानी की झीलें और जलाशय।
4. भारत के पूर्वी तट (चिल्का झील) की डेल्टा आर्द्रभूमि और लैगून।
5. गंगा के मैदानों के मीठे पानी के दलदल और ब्रह्मपुत्र के बाढ़ के मैदान।
6. पूर्वोत्तर भारत और हिमालय की तराई की पहाड़ियों में दलदल और दलदली भूमि।
7. कश्मीर और लद्दाख के पर्वतीय क्षेत्र की झीलें और नदियां।
8. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के मैंग्रोव और अन्य आर्द्रभूमि।

आर्द्रभूमि का महत्व

वेटलैंड सिस्टम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों की सहायता करते हैं, उन्हें सामान और सेवाएं प्रदान करते हैं। वे बाढ़ को रोकने, तटीय कटाव को रोकने और चक्रवातों और ज्वार की लहरों जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों को कम करने में मदद करते हैं। वे लंबे समय तक पानी का भंडारण करते हैं। भारी वर्षा के दौरान बाढ़ के पानी को रोकने की उनकी क्षमता, जो अन्यथा बाढ़ का कारण बन सकती है, नीचे की ओर निरंतर प्रवाह व्यवस्था बनाए रखने, जल की गुणवत्ता को संरक्षित करने और जलीय जीवन के साथ-साथ क्षेत्र के मानव समुदायों के लिए जैविक उत्पादकता बढ़ाने में परिणाम देती है। जलमग्न आर्द्रभूमि वर्षा जल को संग्रहीत करने में बहुत प्रभावी होती है और भूजल जलभृतों को रिचार्ज करने का प्राथमिक स्रोत होती है। कई जलचर पक्षी और जलपक्षी जैसे बगुले व सारस आर्द्रभूमि में घोंसला बनाते हैं। आर्द्रभूमि स्तनधारियों के लिए भोजन और आश्रय भी प्रदान करती है। वे प्राकृतिक फिल्टर के रूप में कार्य करते हैं और पानी से कई तरह के प्रदूषकों को हटाने में मदद करते हैं, जिसमें सीवेज से हानिकारक वायरस और उद्योगों से भारी धातुएं शामिल हैं। आर्द्रभूमियाँ नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे यूट्रोफिक मापदंडों को संग्रहीत करके पोषक

तत्वों को बरकरार रखती हैं और उन्हें उप-मृदा में संचित करती हैं, जिससे यूट्रोफिकेशन की संभावना कम हो जाती है।

मैंग्रोव वन मछली और शंख-मछली, पशुधन चारा, ईंधन और निर्माण सामग्री, स्थानीय दवा, शहद और मधुमक्खी-मोम के उत्पादन और चमड़े को कम करने में प्रयुक्त रसायनों को निकालने के लिए मूल्यवान हैं, खेती और मत्स्य पालन उत्पादन ने कई मैंग्रोव क्षेत्रों का स्थान ले लिया है। इसके अलावा, निरंतर जलापूर्ति, मत्स्य पालन, ईंधन, औषधीय पौधे, पशुधन चारागाह, कृषि, ऊर्जा संसाधन, वन्यजीव संसाधन, परिवहन, मनोरंजन और पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक मूल्य उल्लेखनीय हैं।

आर्द्रभूमियों के लिए खतरा

भारतीय वन्यजीव संस्थान के सर्वेक्षण से पता चलता है कि पिछले पांच दशकों में गंगा के बाढ़ के मैदानों में 70-80 प्रतिशत व्यक्तिगत मीठे पानी के दलदल और झीलें खत्म हो गई हैं। वर्तमान में भारत की केवल 50 प्रतिशत आर्द्रभूमि बची हुई है। वे हर साल 2 प्रतिशत से 3 प्रतिशत की दर से गायब हो रही हैं। भारतीय मैंग्रोव क्षेत्र 1987 में 700,000 हेक्टेयर से घटकर 1995 में 453,000 हेक्टेयर रह गया है (सस्टेनेबल वेटलैंड्स, पर्यावरण शासन-2, 1999)। रिमोट सेंसिंग पर आधारित एक हालिया अनुमान से पता चलता है कि भारत में मैंग्रोव संसाधन का केवल 4000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र है। आर्द्रभूमि के नष्ट होने से पर्यावरण और पारिस्थितिकी संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। इसका सीधा असर संबंधित आबादी के सामाजिक-आर्थिक लाभों पर पड़ता है। बाढ़ में वृद्धि, प्रजातियों में कमी, विकृति या विलुप्ति और जल गुणवत्ता में गिरावट सहित गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आर्द्रभूमि चावल सहित पौधों की विभिन्न प्रजातियों के लिए आनुवंशिक भंडार के रूप में भी महत्वपूर्ण हैं, जो दुनिया की तीन चौथाई आबादी के लिए मुख्य भोजन है।



वेटलैंड सिस्टम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों की सहायता करते हैं, उन्हें सामान और सेवाएं प्रदान करते हैं। वे बाढ़ को रोकने, तटीय कटाव को रोकने और चक्रवातों और ज्वार की लहरों जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों को कम करने में मदद करते हैं।

शहरीकरण शहरी	केंद्रों के पास स्थित वेटलैंड्स पर आवासीय, औद्योगिक और वाणिज्यिक सुविधाओं के लिए विकास का दबाव बढ़ रहा है। सार्वजनिक जल आपूर्ति को संरक्षित करने के लिए शहरी वेटलैंड्स आवश्यक हैं।
मानवजनित गतिविधियाँ	अनियोजित शहरी और कृषि विकास, उद्योग, सड़क निर्माण, जलाशयों की घेराबंदी, संसाधन निष्कर्षण और ड्रेज निपटान के कारण आर्द्रभूमियों का जल-निकासी और रूपांतरण हो गया है, जिससे दीर्घावधि में भारी आर्थिक और पारिस्थितिक क्षति हुई है।
कृषि गतिविधियाँ	1970 के दशक की हरित क्रांति के बाद, आर्द्रभूमि के विशाल हिस्से को धान के खेतों में बदल दिया गया है। सिंचाई के लिए बड़ी संख्या में जलाशयों, नहरों और बांधों के निर्माण ने संबंधित आर्द्रभूमि के जल विज्ञान को काफी हद तक बदल दिया है।
जल विज्ञान संबंधी गतिविधियाँ	सिंचाई के लिए निचले शुष्क क्षेत्रों में जल पहुंचाने के लिए नहरों के निर्माण तथा नदियों और झरनों के बहाव को मोड़ने से जल निकासी का स्वरूप बदल गया है तथा क्षेत्र की आर्द्रभूमि का काफी क्षरण हुआ है।
वनों की कटाई	जलग्रहण क्षेत्र में वनस्पति हटाने से मृदा अपरदन और गाद जमने की समस्या होती है।
प्रदूषण	सीवेज और विषैले रसायनों के अनियंत्रित डंपिंग ने आर्द्रभूमि को प्रदूषित कर दिया है।
सेलिनाइजेशन	भूजल के अत्यधिक दोहन से लवणीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है।
एक्वाकल्चर	मछलियों की मांग ने आर्द्रभूमि वनों को परिवर्तित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है।
शुक्र की प्रजातियाँ	जलकुंभी और साल्विनिया जैसी विदेशी पौधों की प्रजातियों से स्वतंत्र है।
जलवायु परिवर्तन	वायु तापमान में वृद्धि, वर्षा में परिवर्तन, तूफान, सूखे और बाढ़ की आवृत्ति में वृद्धि, वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता में वृद्धि; तथा समुद्र स्तर में वृद्धि भी आर्द्रभूमि को प्रभावित कर सकती है।

भारत में वर्तमान में 85 स्थल हैं जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि (रामसर स्थल) के रूप में नामित किया गया है, जिनका क्षेत्रफल 1.34 मिलियन हेक्टेयर से अधिक है।			
क्र.	वेटलैंड का नाम	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	क्षेत्र (हेक्टेयर)
1	आसन संरक्षण रिजर्व	उत्तराखंड	444
2	अष्टमुडी वेटलैंड	केरल	61,400
3	ब्यास संरक्षण रिजर्व	पंजाब	6,429
4	भिंडावास वन्यजीव अभयारण्य	हरयाणा	412
5	भीतरकनिका मैंग्रोव	ओडिशा	65,000
6	भोज वेटलैंड	मध्य प्रदेश	3,201
7	चंद्रताल वेटलैंड	हिमाचल प्रदेश	49
8	चिल्का झील	उड़ीसा	1,16,500
9	दीपोर बील	असम	4,000
10	पूर्वी कलकत्ता वेटलैंड्स	पश्चिम बंगाल	12,500
11	हरिके झील	पंजाब	4,100
12	होकरा वेटलैंड	जम्मू और कश्मीर	1,375
13	कबरताल वेटलैंड	बिहार	2,620
14	करिकिली पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	58.4
15	कांजली	पंजाब	183
16	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान	2,873
17	केशोपुर-मियानी सामुदायिक रिजर्व	पंजाब	344
18	कोल्लेरु झील	आंध्र प्रदेश	90,100
19	लोगार झील	महाराष्ट्र	427
20	लोकतक झील	मणिपुर	26,600
21	नलसरोवर	गुजरात	12,000
22	नांदुर मदमहेश्वर	महाराष्ट्र	1,437
23	नांगल वन्यजीव अभयारण्य	पंजाब	116
24	नवाबगंज पक्षी अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	225
25	पल्लीकरनई मार्श रिजर्व वन	तमिलनाडु	1,247.5
26	पार्वती अर्गा पक्षी अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	722
27	पिचवरम मैंग्रोव	तमिलनाडु	1,478.6
28	प्लाइंट कैलिमेरे वन्यजीव और पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	38,500
29	पोंग डैम झील	हिमाचल प्रदेश	15,662
30	रेणुका वेटलैंड	हिमाचल प्रदेश	20

आर्द्रभूमि का संरक्षण

भारत में आर्द्रभूमि के संरक्षण के प्रयास 1987 में शुरू हुए और सरकारी प्रयासों का मुख्य ध्यान इंजीनियरिंग विकल्पों को अपनाने के बजाय संरक्षण के जैविक तरीकों पर था। संरक्षण पर एक एकीकृत दृष्टिकोण के लिए एक राष्ट्रीय आर्द्रभूमि-मानचित्रण परियोजना भी शुरू की गई है। कुछ आर्द्रभूमि स्थलों में यह देखना उत्साहजनक है कि सरकार, गैर सरकारी संगठन और स्थानीय समुदाय हमारी आर्द्रभूमि को बचाने के लिए एक साथ आ रहे हैं और इस प्रकार रामसर कन्वेंशन के उद्देश्यों को साकार कर रहे हैं। आर्द्रभूमियों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए उचित नीतियों और उपायों पर सरकार को सलाह देने के लिए गठित आर्द्रभूमियों, मैंग्रोव और प्रवाल भित्तियों पर राष्ट्रीय समिति ने प्राथमिकता के आधार पर संरक्षण और प्रबंधन के लिए 93 आर्द्रभूमियों की पहचान की है।

31	रोपड़	पंजाब	1,365	
32	रुद्रसागर झील	त्रिपुरा	240	
33	समन पक्षी अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	526	
34	समसपुर पक्षी अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	799	
35	सांभर झील	राजस्थान	24,000	
36	सैंडी पक्षी अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	309	
37	सरसई नवार झील	उत्तर प्रदेश	161	
38	सस्थामकोट्टा झील	केरल	373	
39	सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान	हरयाणा	2,457	
40	सुंदरबन वेटलैंड	पश्चिम बंगाल	4,23,000	
41	सुरिनसर-मानसर झीलें	जम्मू और कश्मीर	350	
42	सुर सरोवर	उत्तर प्रदेश	431	
43	थोल झील वन्यजीव अभयारण्य	गुजरात	2,458	
44	त्सो कार वेटलैंड कॉम्प्लेक्स	लद्दाख	9,577	
45	त्सोमोरिरी	जम्मू और कश्मीर	12,000	
46	ऊपरी गंगा नदी	उत्तर प्रदेश	26,590	
47	वेम्बनाड-कोल झील	केरल	1,51,250	
48	वधवाना वेटलैंड	गुजरात	2,454	
49	वुलर झील	जम्मू और कश्मीर	18,900	
			गुजरात	511.70
51	बखिरा वन्यजीव अभयारण्य	उत्तर प्रदेश	2,894	
52	हैदरपुर वेटलैंड	उत्तर प्रदेश	6,908	
53	साख्य सागर	मध्य प्रदेश	248	
54	पाला वेटलैंड	मिजोरम	1,850	
55	नंदा झील	गोवा	42	
56	मन्नार की खाड़ी समुद्री बायोस्फीयर रिजर्व	तमिलनाडु	52,671.9	
57	खिजड़िया वन्यजीव अभयारण्य	गुजरात	511.7	
58	कून्थानकुलम पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	72	
59	सतकोसिया गॉर्ज	ओडिशा	98,196.7	
60	सिरपुर वेटलैंड	मध्य प्रदेश	161	
61	उदयमार्थण्डपुरम पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	43.8	
62	वेदांतगल पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	40.3	
63	वेलोडे पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	77.2	
64	वेम्बन्नूर वेटलैंड कॉम्प्लेक्स	तमिलनाडु	19.7	

65	ताम्पारा झील	ओडिशा	300
66	हीराकुंड जलाशय	ओडिशा	65400
67	अंसुपा झील	ओडिशा	231
68	यशवंत सागर	मध्य प्रदेश	822.90
69	चित्रांगुडी पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	260.47
70	सुचिन्द्रम थेरु वेटलैंड कॉम्प्लेक्स	तमिलनाडु	94.23
71	वदुतुर पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	112.64
72	कंजिरनकुलम पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	96.89
73	ठाणे क्रीक	महाराष्ट्र	6521.08
74	ह्यगाम वेटलैंड संरक्षण रिजर्व	जम्मू और कश्मीर	801.82
75	शालबुध वेटलैंड संरक्षण रिजर्व	जम्मू और कश्मीर	1675
76	अधनाशिनी मुहाना	कर्नाटक	4801
77	अंकसमुद्र पक्षी संरक्षण रिजर्व	कर्नाटक	98.8
78	मगदी केरे संरक्षण रिजर्व	कर्नाटक	54.4
79	करैवेटी पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	453.7
80	लांगवुड शोला रिजर्व वन	तमिलनाडु	116
81	नकटी पक्षी अभयारण्य	बिहार	333
82	नागी पक्षी अभयारण्य	बिहार	206
83	नंजरायण पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	125.865
84	काञ्चुवेली पक्षी अभयारण्य	तमिलनाडु	5151.6
85	तवा जलाशय	मध्य प्रदेश	20050

दरअसल, आर्द्रभूमि का अधिकार क्षेत्र विस्तृत है और यह कृषि, मत्स्य पालन, सिंचाई, राजस्व, पर्यटन, जल संसाधन और स्थानीय निकायों जैसे विभिन्न विभागों के अंतर्गत आता है। उदाहरण के लिए देश के सभी मैंग्रोव वन विभाग के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आते हैं। एक व्यापक आर्द्रभूमि नीति का अभाव, जिसमें प्रत्येक विभाग की अपनी विकास संबंधी प्राथमिकताएँ होती हैं, आर्द्रभूमि के संरक्षण के हितों के विरुद्ध काम करता है, जिसके परिणामस्वरूप जान बूझकर या अनजाने में समस्या और बढ़ जाती है। जलग्रहण क्षेत्र के भीतर आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र आपस में जुड़े हुए और परस्पर क्रियाशील होते हैं। भारत में, अनियोजित शहरीकरण और बढ़ती आबादी ने आर्द्रभूमि को नुकसान पहुंचाया है। इनसे निपटने के लिए, नियोजन, क्रियान्वयन और निगरानी के मामले में आर्द्रभूमि के प्रबंधन को एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना होगा। प्रशिक्षित शिक्षाविदों और पेशेवरों, जिनमें पारिस्थितिकीविद, जलविज्ञानी, अर्थशास्त्री, जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन विशेषज्ञ, योजनाकार और निर्णयकर्ता शामिल हैं, के प्रभावी गठजोड़ को आर्द्रभूमि के समग्र प्रबंधन के लिए स्थानीय विशेषज्ञता के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इन सभी से आर्द्रभूमि के बारे में ज्ञान और समझ बढ़ेगी और अधिक व्यापक और दीर्घकालिक संरक्षण और प्रबंधन रणनीति विकसित होगी। स्थानीय स्कूलों, कॉलेजों और जल निकायों के आस-पास के आम लोगों के बीच आर्द्रभूमि के महत्व के बारे में शैक्षिक कार्यक्रम शुरू करके जागरूकता फैलाना, साथ ही आर्द्रभूमि की जल गुणवत्ता की निरंतर निगरानी करना, आर्द्रभूमि को और अधिक खराब होने से बचाने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा। ■



अरुणाचल में दिखा हिमालयन मर्मोट

एक अभूतपूर्व खोज में, एक शोधकर्ता ने अरुणाचल प्रदेश के मायावी हिमालयन मर्मोट की पहली तस्वीरें खींचने में कामयाबी हासिल की है। इस महत्वपूर्ण खोज ने लुप्तप्राय प्रजातियों के वितरण और व्यवहार पर प्रकाश डाला है और वैज्ञानिक समुदाय और वन्यजीव उत्साही लोगों के बीच उत्साह जगाया है।

■ सिचिता सिन्हा

शोधकर्ता हिरण्यमय चेतिया, नोएडा के एमिटी विश्वविद्यालय में डॉ. मुरली सी. कृष्णा की देखरेख में पीएचडी स्कॉलर हैं और अपनी थीसिस के लिए पिछले चार वर्षों से हिमालयन मर्मोट का अध्ययन कर रहे हैं। यह दुर्लभ प्रजाति दक्षिण एशिया, तिब्बती पठार, सिक्किम और भूटान के पहाड़ों में पाई जाती है, लेकिन अभी भी यह मर्मोट की दुनिया की काफी कम अध्ययन की गई प्रजाति है। हिरण्यमय चेतिया के अध्ययन के जर्नल ऑफ थ्रेटेड स्पीशीज में प्रकाशित होने के साथ, इसने उन पर भविष्य के शोध का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। हिमालयन मर्मोट, मर्मोट की सबसे बड़ी प्रजातियों में से एक है, जो लगभग एक घरेलू बिल्ली के आकार का होता है और इसकी विशेषता इसकी घनी, ऊनी फर है, जो पीठ पर लाल भूरे रंग का और कान, पेट और अंगों पर लाल पीले रंग का होता है। क्षेत्र में गिलहरियों की विविधता, वितरण और उनके सामने आने वाले खतरों को समझने के जुनून से प्रेरित होकर, शोधकर्ता, चेतिया ने गिलहरियों की विभिन्न प्रजातियों का दस्तावेजीकरण करने के लिए इस यात्रा की शुरुआत की। उन्होंने हिमालयन मर्मोट पर ध्यान केंद्रित किया।



अध्ययन से पता चला कि हिमालयन मर्मोट, जो मर्मोटिनी जनजाति से संबंधित है, तवांग जिले के मागो गांव के पास ऊंचे घास के मैदानों में बिलों में रहता है। लगभग 4,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ये घास के मैदान मर्मोटों के लिए उपयुक्त आवास प्रदान करते हैं। चेतिया द्वारा दूरबीन और कैमरे का

उपयोग करके किए गए दृश्य अवलोकनों ने मर्मोटों के व्यवहार, उनकी भोजन की आदतों और कठोर सर्दियों के लिए उनकी तैयारी का खुलासा किया।

तिब्बती बौद्ध धर्म का पालन करने वाला स्थानीय समुदाय हिमालयी मर्मोट को दिरांग मोनपा भाषा में गोमचेन चिकपा के नाम से पुकारता है। सर्दियों के महीनों में मर्मोट की अनुपस्थिति इस विश्वास को जन्म देती है कि वे तपस्वियों की तरह ध्यान में लगे हुए हैं। हालांकि, इस आध्यात्मिक संबंध के बावजूद, नृजातीय चिकित्सा में मर्मोट के उपयोग की रिपोर्टें मिली हैं, जहाँ उनकी चर्बी का उपयोग दर्द निवारक के रूप में और उनकी त्वचा का उपयोग दर्द से राहत के लिए बेल्ट के रूप में किया जाता है।

हालांकि अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) की संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में हिमालयन मर्मोट को सबसे कम चिंताजनक श्रेणी में रखा गया है, लेकिन फिर भी इस प्रजाति को कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें आवास का नुकसान, शिकार, जंगली कुत्तों द्वारा शिकार और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। चेतिया भारत में, विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश में, जहाँ इसे अनदेखा किया गया है, इस प्रजाति की जनसंख्या स्थिति और वितरण का आकलन करने के लिए आगे के अध्ययनों की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

अरुणाचल प्रदेश में हिमालयन मर्मोट की अभूतपूर्व खोज इस क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता को उजागर करती है और इसके अद्वितीय वन्यजीवन की सुरक्षा के लिए संरक्षण प्रयासों के महत्व को रेखांकित करती है। उम्मीद है कि इस दुर्लभ प्रजाति का दस्तावेजीकरण मौजूदा खतरों के सामने इसके संरक्षण और संरक्षण में योगदान देगा। ■

जानिए मर्मोट के बारे में सबकुछ

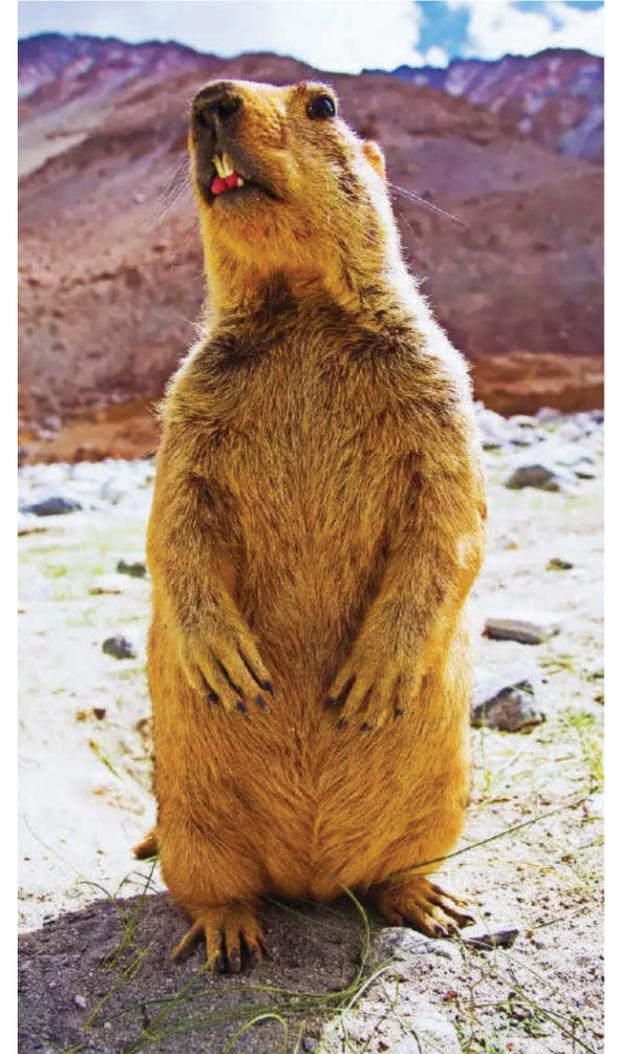
मर्मोट बड़ी ज़मीनी गिलहरियाँ हैं, जिनकी 15 प्रजातियाँ एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में पाई जाती हैं। ये शाकाहारी जानवर गर्मियों के दौरान सक्रिय रहते हैं, जब उन्हें अक्सर समूहों में देखा जा सकता है। सर्दियों के दौरान नहीं देखे जाते हैं। तब ये भूमिगत हाइबरनेट करते हैं। मर्मोट गिलहरी परिवार के सबसे भारी सदस्य हैं।

मर्मोट बड़े कुंतक होते हैं। इनके विशेष रूप से छोटे लेकिन मजबूत पैर, बड़े हुए पंजे होते हैं जो खुदाई करने के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होते हैं। मजबूत शरीर और बड़े सिर व नुकीली दांत होने के कारण ये विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को जल्दी से खा लेते हैं। अधिकांश प्रजातियाँ मिट्टी के रंग के भूरे रंग के विभिन्न रूप हैं। मर्मोट के फर अपने परिवेश के आधार पर विभिन्न रंगों के होते हैं। अधिक खुले आवास में प्रजातियों का रंग हल्का होने की अधिक संभावना है, जबकि कभी-कभी अच्छी तरह से वन क्षेत्रों में पाए जाने वाले गहरे रंग के होते हैं। इनकी कुल लंबाई आम तौर पर लगभग 42 से 72 सेमी तक होती है और शरीर का औसत द्रव्यमान लगभग 2 किलोग्राम होता है। छोटी प्रजातियों में वसंत में और 8 किलोग्राम बड़ी प्रजातियों में, कभी-कभी 11 किलोग्राम से अधिक वजन होता है।

एशिया में हिमालयन मर्मोट और तारबागन मर्मोट, ओलिंपिक मर्मोट के लगभग समान शरीर द्रव्यमान प्राप्त करते हैं। हाइबरनेशन की पारंपरिक परिभाषा में, सबसे बड़े मर्मोट्स को सबसे बड़ा सच्चा हाइबरनेटर माना जाता है। मर्मोट की कुछ प्रजातियाँ पहाड़ी क्षेत्रों में रहती हैं। इनमें यूरोप में आल्प्स, उत्तरी एपेनिन, कार्पेथियन, टाट्रा और पाइरेनीस, उत्तर-पश्चिमी एशिया; रॉकी पर्वत, ब्लैक हिल्स, कैस्केड और पैसिफिक रेंज और उत्तरी अमेरिका में सिएरा नेवादा और पाकिस्तान में देवसाई पठार और भारत में लद्दाख में ये पाये जाते हैं। अन्य प्रजातियाँ उबड़-खाबड़ घास के मैदान पसंद करती हैं और उत्तरी अमेरिका और यूरेशियन स्टेप में व्यापक रूप से पाई जा सकती हैं। मर्मोट आम तौर पर बिलों में रहते हैं। ज्यादातर मर्मोट बहुत ज्यादा सामाजिक होते हैं और एक दूसरे से संवाद करने के लिए जोरदार सीटी बजाते हैं, खास तौर पर तब, जब वे घबरा जाते हैं। मर्मोट मुख्य रूप से साग और कई प्रकार की घास, जामुन, लाइकेन, काई, जड़ें और फूल खाते हैं। मर्मोट आमतौर पर मार्च से सितम्बर तक सक्रिय रहते हैं और फिर वर्ष के बाकी समय शीत निद्रा में रहते हैं, जिसका अर्थ है कि उनका लगभग 60% जीवन शीत निद्रा में व्यतीत होता है!

क्यों मनाते हैं मर्मोट दिवस

मर्मोट दिवस की शुरुआत 1990 के दशक में हुई थी, जब इसे अलास्का राज्य सीनेट में एक विधेयक के रूप में प्रस्तावित किया गया था। चूँकि मर्मोट ऐसे जीव हैं, जो अलास्का राज्य में विशेष रूप से प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए इस जानवर की ओर ध्यान आकर्षित करने का विचार था क्योंकि यह अलास्का के कुछ लोक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। राज्य विधायक कर्टिस मेनार्ड द्वारा प्रायोजित इस विधेयक को



पारित होने में कुछ समय लगा, लेकिन अंततः गवर्नर साराह पॉलिन द्वारा इसे कानून बना दिया गया। विधानमंडल द्वारा पारित होने के बाद से मर्मोट दिवस अलास्का राज्य में एक आधिकारिक अवकाश है। उत्सव कई अलग-अलग रूप लेते हैं, जिसमें आम तौर पर एक पारिवारिक रात्रिभोज या किसी प्रकार की सभा शामिल होती है जहाँ मर्मोट से संबंधित चुटकुले और उपाख्यान साझा किए जाते हैं। ■

पेंगोलिन के शरीर के हर टुकड़े की मिलती है मुंहमांगी कीमत

विश्व पेंगोलिन दिवस हर साल फरवरी के तीसरे शनिवार को मनाया जाता है। इस साल भी यह 15 फरवरी को मनाया जाएगा। इस दिन का उद्देश्य पेंगोलिन का जश्न मनाना, जागरूकता बढ़ाना और अफ्रीका और एशिया में पेंगोलिन के वैश्विक कब्जे के खिलाफ लड़ाई के लिए अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों को फिर से प्रतिबद्ध करना है। अनुमान है कि इन अद्भुत जानवरों की दस लाख से अधिक प्रजातियों को अफ्रीकी और एशियाई देशों के जंगलों से पकड़ा गया है और पकड़ा जा रहा है, ताकि उनके स्केल, त्वचा, रक्त और यहां तक कि भ्रूण की उच्च मांग को पूरा किया जा सके। यह दिन पेंगोलिन के प्रति उत्साही लोगों और व्यापक मानव समुदाय के लिए इन अनोखे स्तनधारियों की दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हाथ मिलाने का अवसर है। आपको बता दें कि एशिया और अफ्रीका में पेंगोलिन की संख्या तेजी से घट रही है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

पेंगोलिन एक अत्यधिक मूल्यवान प्राणी है, जिसे अक्सर अवैध रूप से फंसाया जाता है। इसकी तस्करी की जाती है तथा बड़े पैमाने पर संगठित अपराध नेटवर्क द्वारा इसके आकार के कारण मार दिया जाता है। पेंगोलिन एक ऐसा प्राणी है, जिसके शरीर के हर एक अंग का अंतरराष्ट्रीय बाजार में ऊंची कीमत है। पेंगोलिन के शल्क को सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज माना जाता है तथा इसके मांस को एक स्वादिष्ट व्यंजन माना जाता है। वियतनाम और पश्चिम अफ्रीका के मध्य

और दक्षिणी भागों में पेंगोलिन को अक्सर उन धनी ग्राहकों को भोजन उपलब्ध कराने वाले रेस्तरां में परोसा जाता है, जो इसके मांस को दुर्लभ और प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते हैं। भयभीत होने पर पेंगोलिन अपने कोमल निचले हिस्से की रक्षा के लिए एक गेंद की तरह सिकुड़ जाता है, जिससे यह अवैध शिकारियों के लिए एक प्रमुख लक्ष्य बन जाता है। वन्यजीव न्याय आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2016 से 2019 तक अनुमानित 206.4 टन पेंगोलिन शल्क या लगभग 360,000 पेंगोलिन के बराबर 52 जन्तियों से जब्त किया गया। वन्यजीव न्याय आयोग नीदरलैंड में स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है, जिसका मिशन संगठित अंतरराष्ट्रीय अपराधिक वन्यजीव व्यापार नेटवर्क को बाधित करना और नष्ट करने में मदद करना है।

दरअसल, पेंगोलिन एक शर्मीला और अकेला स्तनपायी जीव है जो सिर से लेकर पैर तक केराटिन

से बने शल्कों से ढका रहता है। यह वही पदार्थ है जो हमारे नाखूनों में होता है। इनका नाम मलय शब्द पेंगुलिन से आया है, जिसका अनुवाद रोलर होता है। यह पेंगोलिन की रक्षा के लिए गेंद की तरह मुड़ने की क्षमता को दर्शाता है। पेंगोलिन की जीभ 40 सेंटीमीटर लंबी होती है और लार बहुत चिपचिपी होती है जिसका इस्तेमाल वे चींटियों और दीमकों को इकट्ठा करने के लिए करते हैं। ये प्रत्येक साल 70 मिलियन तक चींटियाँ और दीमक खा जाते हैं। इससे उनके आवासों में कीटों की संख्या को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। पेंगोलिन अपने लंबे, तीखे पंजों से कीटों को खोदते हैं, बिल बनाते हैं जिनका इस्तेमाल दूसरे जानवर करते हैं और पोषक तत्वों को फैलाने और मिट्टी को हवादार बनाने में मदद करते हैं। उनकी उपस्थिति और आहार के कारण, पेंगोलिन को स्केली एंटीटर के रूप में भी जाना जाता है और माना जाता है कि वे एंटीटर और आर्मडिलोस से संबंधित हैं। हालाँकि, वे वास्तव में कार्निवोरा समूह से अधिक निकटता से संबंधित हैं, जिसमें बिल्लियाँ, कुत्ते और भालू शामिल हैं।

पेंगोलिन का वैज्ञानिक नाम क्या है?

पेंगोलिन परिवार का वैज्ञानिक नाम मैनिडी है, और इसकी तीन उपश्रेणियाँ हैं:



फैटागिनस और स्मुटिसिया, जो अफ्रीका में पाए जाते हैं, मैनिड, जो एशिया में पाए जाते हैं। कुल मिलाकर, पेंगोलिन की आठ अलग-अलग प्रजातियाँ हैं।

क्या पेंगोलिन संकटग्रस्त हैं?

प्रत्येक पेंगोलिन प्रजाति की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ संरक्षण स्थिति संवेदनशील से लेकर गंभीर रूप से संकटग्रस्त तक है। सुंडा, फिलीपीन और चीनी पेंगोलिन को गंभीर रूप से संकटग्रस्त माना जाता है। ये सभी अत्यधिक शिकार, तस्करी और आवास क्षति से पीड़ित हैं। विशाल जमीनी पेंगोलिन, पेड़ पेंगोलिन और भारतीय पेंगोलिन सभी लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में हैं। मानव कृषि के कारण उनके आवास नष्ट हो गए हैं और उनकी खाल और शल्क के लिए उनकी तस्करी की जाती है। लंबी पूंछ वाले पेंगोलिन और टेम्पिक पेंगोलिन को असुरक्षित के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वे मानव कृषि, परिवहन गलियारों, शिकार, तस्करी और जलवायु परिवर्तन के कारण खराब मौसम से प्रभावित होते हैं।

पेंगोलिन कहाँ रहते हैं?

पेंगोलिन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ चींटियाँ और दीमक बहुतायत में होते हैं। इसमें उष्णकटिबंधीय वन, सवाना घास के मैदान, घनी झाड़ियाँ और यहाँ तक कि खेती

वाले क्षेत्र भी शामिल हैं। कई पेंगोलिन जमीन पर रहते हैं, बड़े बिलों या पेड़ों के खोखले में सोते हैं। कुछ जैसे कि ब्लैक-बेलिड पेंगोलिन, अपनी बेहद लंबी पूंछ की बदौलत पेड़ों पर चढ़ सकते हैं। मैनिड पेंगोलिन एशिया में रहते हैं, जो भारत, चीन, मलेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस और थाईलैंड के क्षेत्रों में फैले हुए हैं। फैटागिनस और स्मुटिसिया प्रजातियाँ अफ्रीका में, सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में रहती हैं। अधिकांश मध्य अफ्रीका में रहते हैं, लेकिन टेम्पिक पेंगोलिन तंजानिया, मोजाम्बिक, जिम्बाब्वे और दक्षिण अफ्रीका तक में भी पाए जा सकते हैं। पेंगोलिन अपने प्राकृतिक आवास के बाहर पनप नहीं सकते हैं। उन्हें कैद में पालने के प्रयास सफल नहीं हुए हैं। इस वजह से जंगल में उन पर नज़र रखना कितना मुश्किल है। पेंगोलिन के बारे में कई तथ्य अभी भी हमारे लिए अज्ञात हैं, जिनमें उनका जीवनकाल भी शामिल है।

बढ़ती तस्करी से पेंगोलिन के अस्तित्व पर संकट

भारत में पेंगोलिन के अवैध व्यापार को लेकर आए एक नए विश्लेषण से पता चलता है कि बहुत बड़े पैमाने पर व्यापार हो रहा है। इसे रोकने के लिए तत्काल ज़रूरी कदम उठाने की बात भी इस विश्लेषण में स्पष्ट रूप से कही गई है। भारत में माना जाता है

2022 की अनुसूची में सूचीबद्ध किया गया है। यह शिकार, व्यापार और प्रजातियों या उनके शरीर के अंगों व डेरिवेटिव के उपयोग के किसी अन्य तरीके को प्रतिबंधित करता है।

भारत में पेंगोलिन की तस्करी

एक गैर-सरकारी संगठन, ट्रेफिक के भारतीय कार्यालय की नई फैक्टशीट में 2018 से 2024 तक भारत में पेंगोलिन और उनके अंगों की ज़ब्ती का विश्लेषण है। इसमें प्रिंट और ऑनलाइन मीडिया की रिपोर्टों को आधार बनाया है। यह विश्लेषण भारत में लुप्तप्राय प्रजातियों, विशेष रूप से जिनके बारे में कम जानकारी है। इस विश्लेषण में ज़ब्ती के 541 मामलों की रिपोर्ट को शामिल किया गया। विश्लेषण के मुताबिक, भारत में अवैध व्यापार के लिए कम से कम 2,014 पेंगोलिन जंगलों से लाए गए।

ज्यादातर मामलों में, प्रजातियों (इंडियन या चाइनीज़) का ब्योरा नहीं था। बरामदगी की 50 फीसदी घटनाओं में जीवित पेंगोलिन शामिल थे। यह संख्या 223 थी। बरामदगी के 42 फीसदी मामलों में पेंगोलिन के स्केल्स पाए गए। अनुमान है कि 943 पेंगोलिन से ये स्केल्स निकाले गए। जब्त किए गए अन्य पेंगोलिन डेरिवेटिव में शव (11 बरामदगी से 15 जानवर), खाल (सात बरामदगी से 29 जानवर), पंजे, मांस और हड्डियां शामिल हैं। भारत के विभिन्न राज्यों की अगर बात करें तो पाएंगे कि ओडिशा में सबसे ज्यादा बरामदगी हुई। यहां 74 मामले सामने आए। इसी राज्य में जीवित पेंगोलिन की बरामदगी के भी सबसे ज्यादा मामले सामने आए। इसमें 45 मामलों में 50 पेंगोलिन बरामद किए गए। इसके बाद, महाराष्ट्र का नंबर है जहां 27 मामलों में 32 पेंगोलिन बरामद किए गए। पेंगोलिन स्केल्स की बरामदगी के बारे में बात करें तो ओडिशा और मध्य प्रदेश टॉप पर हैं। लेकिन अगर पेंगोलिन स्केल्स की बरामदगी में शामिल पेंगोलिन की संख्या की बात करेंगे तो कर्नाटक टॉप पर रहा। कर्नाटक में 14 घटनाओं में 129 पेंगोलिन के बराबर स्केल्स जब्त किए गए। इसके बाद तमिलनाडु का नंबर रहा, जहां केवल तीन घटनाओं में 125 पेंगोलिन के बराबर स्केल्स जब्त किए गए। भारत में पेंगोलिन व्यापार को लेकर ट्रेफिक के पिछले विश्लेषण की तुलना में, आंकड़े बताते हैं कि राज्यों में ज़ब्ती की रिपोर्टिंग में मामूली बदलाव है। नए आकलन में भारत के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों से अधिकांश ज़ब्ती की रिपोर्ट है। वर्ष 2009-17 के बीच ज़ब्ती की रिपोर्ट में उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर सबसे ऊपर है।

पूर्वी और मध्य भारत के राज्यों में अभी भी संरक्षित क्षेत्रों के अतिरिक्त, महत्वपूर्ण वन क्षेत्र हैं। ऐसे संकेत हैं कि पेंगोलिन के अवैध व्यापार के लिए शिकारियों द्वारा इन वन क्षेत्रों को निशाना बनाया जा रहा है। हालांकि, ऐसा भी हो सकता है कि संरक्षण कानूनों को लागू करने वाली एजेंसियों के बढ़ते प्रयासों के चलते ऐसे मामले ज्यादा सामने आ रहे हों। रिपोर्टिंग से जुड़े प्रयास निश्चित रूप से आंकड़ों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। ओपन-सोर्स डाटा से तस्करी के रास्तों के बारे में निष्कर्ष निकालना मुश्किल है। कुछ स्रोतों ने भारत से चीन की तरफ होने वाली पेंगोलिन की तस्करी के रास्तों के बारे में बताया है जिनमें म्यांमार और नेपाल वाला रास्ता भी शामिल है। अवैध पेंगोलिन का व्यापार इतना बढ़ा है कि यह भारत में पेंगोलिन के भविष्य की

एक गंभीर तस्वीर पेश करता है। हालांकि, भारत के पेंगोलिन के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर मजबूत सुरक्षा उपायों और अवैध शिकार व तस्करी को रोकने के लिए प्रवर्तन कार्रवाइयों के माध्यम से इनके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। विभिन्न हितधारकों के बीच, इस मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों की पहल से, इन प्रयासों को पूरा किया जा रहा है।

क्या करने की ज़रूरत है

अवैध व्यापार को समझने, प्रजातियों की रक्षा और संरक्षण के लिए उपयुक्त निर्णय लेने के लिहाज से, पेंगोलिन के बारे में जानकारी और समझ:मसलन, भारत की दो प्रजातियों के बीच अंतर कैसे करें, भारत के वन विभाग के अधिकारियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। चूंकि पेंगोलिन की तस्करी का मामला कई सीमाओं तक फैला हुआ है, इसलिए पेंगोलिन स्केल्स की पहचान करने के लिए किसी मानक तकनीक और अवैध शिकार से प्रभावित होने वाली प्रजातियों और क्षेत्रों को इंगित यानी पिन प्वाइंट करने के लिए डीएनए-आधारित तरीकों की मौजूदा समय में आवश्यकता है। हर राज्य के फॉरेस्ट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स, पुलिस ट्रेनिंग एकेडमीज, नेशनल एकेडमी ऑफ कस्टम्स, इनडायरेक्ट टैक्स एंड नारकोटिक्स और सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स के ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स जैसी एजेंसियों में कंजर्वेशन लॉ एनफोर्समेंट यानी संरक्षण संबंधी कानूनों को ठीक ढंग से लागू करने के लिए, पेंगोलिन डेरिवेटिव्स की पहचान को लेकर, संस्थागत प्रशिक्षण से, इस प्रयास में काफी मदद मिल सकती है। ज़रूरत इस बात की है कि भारत के नीति निर्माता बिलों में रहने वाले पेंगोलिन की दुर्दशा को दफ़न न रहने दें। पेंगोलिन के अवैध व्यापार को भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देखा जा रहा है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। ट्रेफिक के विश्लेषण ने भारत में पेंगोलिन और उनके डेरिवेटिव्स के ऑनलाइन कारोबार की आठ घटनाओं को दर्ज किया। इस तरह के प्लेटफॉर्म, तस्करों और खरीदारों के बीच सीधे व्यापार और पैसे का लेन-देन करा सकते हैं। ऐसे में, कानूनी तरीके से हस्तक्षेप करना मुश्किल हो सकता है। इस बात की तत्काल आवश्यकता है कि लॉ एनफोर्समेंट एजेंसीज, ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया कंपनियों के जरिए पेंगोलिन और

अन्य संरक्षित प्रजातियों के ऑनलाइन व्यापार की निगरानी करें। कोलिशन टू एंड वाइल्डलाइफ ट्रेफिकिंग ऑनलाइन जैसे आपसी सहयोग वाले मौजूदा प्रयास दुनिया भर में सकारात्मक परिणाम दिखा रहे हैं। और इस तरह के प्रयासों को भारत के भीतर भी करने की ज़रूरत है।

ज़रूरत इस बात की है कि भारत के नीति निर्माता बिलों में रहने वाले पेंगोलिन की दुर्दशा को दफ़न न रहने दें। मतलब, पेंगोलिन की यही दुर्दशा बरकरार न रहे, इसके लिए ज़रूरी प्रयासों की आवश्यकता है। अगर पेंगोलिन के अवैध व्यापार पर प्रभावी तरीके से लगातार लगाई जाती है तो भारत की कीमती और नाजुक जैव विविधता का दोहन करने से संगठित अपराध नेटवर्क को रोका जा सकेगा। पेंगोलिन की आबादी को बचाने से वे भारत के हैबिटेट्स को स्वस्थ रखने में अपनी महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी भूमिका निभाना जारी रख सकेगे। ■

जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ रही है चूहों की आबादी

चूहों से केवल भारतीय परेशान नहीं हैं, बल्कि पूरी दुनिया इससे त्रस्त है। यह परेशानी तब और बढ़ जाती है जब विज्ञान भी अपने शोधों के दम पर इस बात को सही ठहराता है कि वास्तव में विश्वभर में चूहों की संख्या में तेज गति से बढ़ रही है। एक शोध से बात निकलकर आई है कि दुनिया भर के प्रमुख शहरों में चूहों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। इनकी संख्या में बढ़ोतरी का कारण जलवायु परिवर्तन बताया जा रहा है।

हिमांशु

गौरतलब है कि चूहों को 50 से अधिक जूनोटिक रोगों के संचारित करने के लिए जाना जाता है। इससे स्वास्थ्य क्षेत्र में चिंताएँ तेजी से बढ़ रही हैं। यह बात साइंस एडवांसेज पत्रिका में प्रकाशित शोध में कहा गया है। इस नए अध्ययन से पता चला है कि जलवायु परिवर्तन दुनिया भर के प्रमुख शहरी केंद्रों में चूहों की आबादी को बढ़ाने में अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा कर रहा है। शोध में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि कैसे बढ़ते तापमान और शहरीकरण से चूहों की संख्या में तेज वृद्धि को बढ़ावा मिल रहा है। इस शोध में शामिल 16 में से 11 शहरों में चूहों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। न्यूयार्क और एम्स्टर्डम में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई, जबकि ऑकलैंड, शिकागो, बोस्टन, कैनसस सिटी और सिनसिनाटी में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। हालांकि टोक्यो, लुइसविले और न्यू ऑरलियन्स जैसे कुछ शहरों में चूहों की आबादी में गिरावट देखी गई। विशेष रूप से न्यू ऑरलियन्स में अध्ययन अवधि के दौरान सबसे अधिक कमी दर्ज की गई।

शोध में पाया गया कि उच्च तापमान, घनी मानव आबादी, व्यापक शहरीकरण, प्रचुर मात्रा में खाद्य और कम हरियाली वाले शहरों में चूहों की आबादी में वृद्धि होने की अधिक संभावना देखी गई। अध्ययन में चूहों की दो प्रजातियों रैटस नॉर्वेजिकस और रैटस पर ध्यान केंद्रित किया गया जो वैश्विक रूप से फैले हुए हैं।

और ये कृषि उपज और खाद्य आपूर्ति को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाने के लिए जिम्मेदार माने होते हैं। अकेले अमेरिका में इन चूहों द्वारा होने वाले नुकसान की कुल अनुमानित लागत सालाना लगभग 27 बिलियन डॉलर आंकी गई है। अध्ययन में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर चूहों की आबादी को



नियंत्रित करने के हर साल लगभग 500 मिलियन डॉलर खर्च होते हैं।

चूहों में 50 से अधिक जूनोटिक रोगाणु इंसानों में फैल सकते हैं, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी गंभीर चिंताएँ पैदा होती हैं। अध्ययन में कहा गया है कि इससे जुड़ी बीमारियों में लेप्टोस्पायरोसिस, हंटवायरस पल्मोनरी सिंड्रोम, म्यूरिन टाइफस और ब्यूबोनिक प्लेग आदि शामिल हैं। शोधकार्य के प्रमुख जोनाथन रिचर्डसन और उनके सहयोगियों ने चूहों की आबादी, तापमान औसत, मानव आबादी की स्थिति के आंकड़े अमेरिकी शहरों की सरकारों एकत्र किए हैं। अध्ययन में पाया गया कि चूहों की आबादी के बदलाव में तापमान की अहम भूमिका होती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि चूहों की संख्या में 40.7 प्रतिशत की तेजी शहर के औसत तापमान में वृद्धि से जुड़ा था।

शोधपत्र में कहा गया है कि अधिकांश छोटे स्तनधारियों की तरह चूहों की गतिविधियाँ भी ठंडे तापमान से बाधित होती हैं। जब तापमान कम हो जाता है तो चूहों को लंबे समय तक आश्रय में रहना पड़ता है। उदाहरण के लिए न्यूयॉर्क शहर में चूहों की गमियों के अंत में आबादी चरम पर थी और सदियों के दौरान कम हो गई। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया है कि कम वनस्पति वाले शहरों में चूहों की संख्या में अधिक वृद्धि देखी गई जो भोजन की उपलब्धता और आवास से जुड़ी हो सकती है।

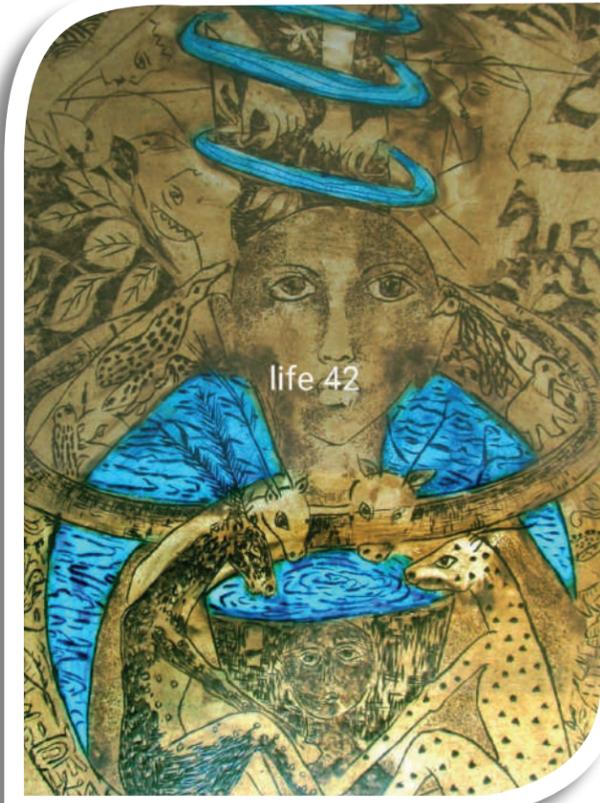
शोधकर्ताओं ने जलवायु परिवर्तन से निपटने और चूहों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए आक्रामक रणनीतियों को लागू करने के लिए एक सामूहिक वैश्विक प्रयास का आह्वान किया है। उनकी सिफारिशों में कहा गया है कि कचरा और खाद्य अपशिष्ट का प्रबंधन सबसे प्रमुख क्षेत्र है। इसके अलावा स्वच्छता को सर्वोत्तम प्राथमिकता बताई गई है। ■



सोहराय कला ने मेरा दिल जीत लिया: हेमलता

मैं हेमलता। मेरा जन्म झारखंड के भुरकुंडा में हुआ। पापा सीसीएल में इंजीनियर थे। मैं बहुत सौभाग्यशाली लड़की थी कि मुझे पढ़ने का हर जगह मौका मिला। रांची संत जॉन्स से पास आउट हूँ। निर्मला कॉलेज से इंटर किया। इंजीनियरिंग में ट्राई किया। मेरे अंदर भी यही था कि मैं डॉक्टर या इंजीनियर बनूँ। मेरे घर में तीनों भाई इंजीनियर हैं और पापा भी इंजीनियर थे। मुझे मैथ और साइंस से काफी लगाव था। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से वह नहीं हुआ। फिर मेरे भैया ने कहा कि तुम आर्ट में जाओ। मैं बचपन से ही आर्ट करती थी। फिर इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से बीएससी किया। इस दौरान मुझे यह पता लगा कि यह लाइन बहुत अच्छा है और बहुत ही प्रोग्रेस कर सकते हैं।

मेरे दोस्त कहा करते थे कि कैसे तुम इस लाइन में आ गई। दरअसल, मेरे भाईयों ने मुझे इस लाइन में आने के लिए प्रेरित किया। काफी मेहनत की। जो भी गुरु थे, बहुत अच्छे थे। कॉलेज से ही



मुझे अवार्ड मिलने लगे। इसके बाद माता-पिता को भी लगने लगा कि यह लाइन बहुत अच्छा है। फिर मैं बड़ौदा यूनिवर्सिटी चली गई। वहीं से मास्टर की डिग्री ली। मुझे अच्छे गुरु मिले।

मेरे हर्बैंड राजीव दत्त बहुत सपोर्टिव रहे। तभी मैं अपना कोर्स कंप्लीट कर पाई। मैं इस लाइन में काम करती रही। इस बीच जितने भी कैंप हुए, उसमें मैं गई। इस दौरान मेरे बच्चों और घर का ख्याल हर्बैंड ही रखते थे। इसलिए मैं बोलूंगी कि उन्होंने काफी सपोर्ट किया। पहले तो मेरे पापा-मम्मी और भैया थे और जिसे फर्स्ट गुरु बोलते हैं वह मेरे बड़े भाई थे। मेरे तीन भाई हैं-पहले राजन कुमार प्रसाद, दूसरे मनोज कुमार और तीसरे हैं प्रदीप। तीनों का रोल मेरे लाइफ में बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि तीनों ने काफी सपोर्ट किया।

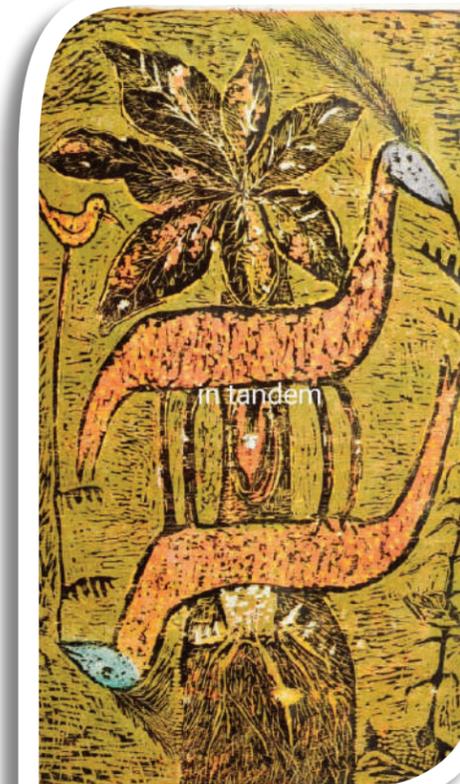
मैं बचपन में बहुत बीमार रहती थी। मेरे हाथ में बहुत ज्यादा प्रॉब्लम था। पापा ने तब बहुत सपोर्ट किया। आज मैं जो भी हूँ, अपने घरवालों के कारण ही हूँ। आज मैं रांची में

स्टूडियो बना रही हूँ, क्योंकि मेरे पापा का यह ड्रीम था। स्टूडियो पापा के घर में ही है। पापा तो अब नहीं रहे, मम्मी ने यह काम करवाया। मम्मी भी लास्ट ईयर नहीं रहीं, लेकिन फिर भी मैं काम कर रही हूँ और उसमें लगी हुई हूँ।

मेरा काम बाहर भी जाता है। मैंने कई एग्जिबिशन किया है। मैंने अपना सब्जेक्ट चुना है ग्राफिक। यह मुझे इसलिए पसंद था कि क्योंकि यह टेक्निकल है। मैं साइंस से थी और मेरे काम में काफी इंफ्लूमेंट इसलिए था कि मुझे रिसर्च करना बहुत अच्छा लगता था। मैंने इस पर काफी टेक्निकल काम किया और इसमें मुझे सफलता भी मिली।

सोहराय आर्ट पर मैंने 1998 से काम करना शुरू किया। सोहराय आर्ट बहुत ही नेचुरल और बहुत ही खूबसूरत है। यह मुझे बहुत अच्छा लगता है और इस पर मैं काफी कम कर रही हूँ और आगे भी करूंगी। जहाँ तक हो मैं ऊपर लेकर इसे जाऊंगी। बिहार में जैसे मधुबनी पेंटिंग काफी ऊपर है, तो हमारे झारखंड में सोहराय आर्ट है। मैं कोशिश कर रही हूँ कि अपने ग्राफिक्स के माध्यम से इसे लेकर आगे तक जाऊँ।

2020 में जब मुझे फेलोशिप मिला तो मैंने हजारीबाग में भी वर्कशॉप किया। गांवों में घूमी और लोगों को नजदीक से देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं जिन राज्यों में जा रही हूँ, उनके फोक आर्ट को करीब से देख रही हूँ। बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ आदि के फोक आर्ट भी ला रही हूँ। अभी मधुबनी गई थी। वहाँ मधुबनी पेंटिंग का अध्ययन किया। अभी मेरा सफर ऐसा ही चल रहा है। मैं चाह रही हूँ कि रांची में कुछ अच्छा करूँ। जो यहाँ के बच्चे हैं कुछ अच्छा करें। जो काम करने में मुझे 25 साल लग गये, वो वक्त इन बच्चों को ना लगे। हमारे यहाँ ग्राफिक्स को लेकर कोई अवेयरनेस नहीं है। मैं चाहती हूँ कि इसकी जानकारी बच्चों को दूँ और वह काफी अच्छा कर सकते हैं। आज डिजिटल युग है। कक्षा 11-12 के जो बच्चे हैं, वो जब कॉलेज में जाएंगे तो उनको यह चीज पता लगेगी कि ग्राफिक्स भी एक लाइन है तो शायद उनकी लाइफ और भी अच्छा हो। वह डिप्रेशन में नहीं जाएंगे कि इंजीनियरिंग और डॉक्टरी ही एक लाइन है।



दरअसल, यह ग्राफिक्स एक कला है। प्राचीन काल में जब वार होते थे तो मैसेज देने के लिए उस समय लकड़ियों पर कार्विंग और पेंट करते थे। उस समय से ही शुरूआत हुई है छाया कला की। लाइमस्टोन का यह एक कैरेक्टर है जो काफी सेंसिटिव होता है। उसे आप ड्राइंग करो और टेक्निकली उस पर काम करो तो वह ब्लॉक बन जाता है। आपको सिंपल दिखेगा कि वह ड्राइंग है, पर हम उसे पूरी मेथड से पेंट कर लेते हैं और वह पेंटिंग कैनवास पर काफी नेचुरल लगती है। यहाँ के लोगों में धारणा है कि आर्ट मतलब पेंटिंग, लेकिन यह भी एक मीडिया है जो हमारे बिहार-झारखंड के लोगों को नहीं पता है।

इसमें करियर बनाना है तो सबसे पहले फ्रीलांस आर्टिस्ट बनिए जो मैं कर रही हूँ। इसमें गवर्नमेंट से काफी मदद मिलती है। आगे भी आप काम कर सकते हैं। टीचिंग लाइन में भी अच्छे पोस्ट पर जा सकते हैं।

आजकल इंजीनियरिंग कॉलेज में भी बी डिजाइन खुल रहा है। हर इंजीनियरिंग कॉलेज में, आईआईटी में भी बी डिजाइनिंग होती है। तो इस लाइन में भी हम जाकर आगे काम कर सकते हैं। बहुत सारी अपॉर्चुनिटी है, अगर हम काम करना चाहें तो।

रांची में मेरा स्टूडियो 75% कंप्लीट हो चुका है। सब ठीक रहा तो मैं रेजिडेंशियल स्टूडियो भी ओपन करूंगी। अभी मैं एक छोटा सा वर्कशॉप कर रही हूँ। यहाँ के बच्चों के लिए कर रही हूँ यह वर्कशॉप। बच्चे यहाँ आयें और काम करें।

सोहराय कला बहुत नेचुरल है। जो भी लोगों ने देखा, उसे अपनी अंतरात्मा से कैनवास पर उकेरा। यह आर्टिस्ट का मन और भाव है। जो मुझे फील होता है, उसे मैं कैनवास पर डाल पाती हूँ। यह एक आर्टिस्ट का मनोभाव है। इसने मुझे बहुत टच किया। मैं अभी अपने ग्राफिक में वह नेचुरल मिट्टी कलर से लेना चाह रही हूँ। सक्सेस हुई तो बहुत अच्छा रहेगा। ■

(जैसा हेमलता जी ने प्रधान संपादक आनंद सिंह से कहा)



गौर से पढ़िए युगांतर प्रकृति

हमारे **20 सवालों** के जवाब दीजिए
और, पाइए आकर्षक पुरस्कार
पढ़ो और पुरस्कार पाओ (5)

प्रथम पुरस्कार-501 रुपये नकद

द्वितीय पुरस्कार-351 रुपये नकद

तृतीय पुरस्कार-251 रुपये नकद

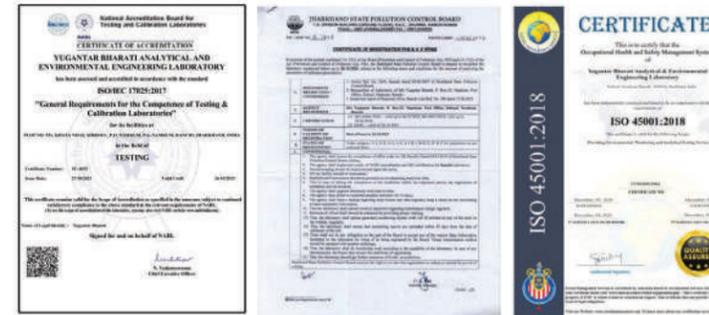
नियम और शर्तें

1. आपको युगांतर प्रकृति का यह अंक बेहद गौर से पढ़ना है।
2. इसी अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों से हम 20 सवाल करेंगे। उन 20 सवालों के जो सही-सही जवाब देंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा।
3. अगर 20 में से 20 सवालों के सही जवाब कई लोग देते हैं तो पुरस्कार उन्हें मिलेगा, जिनका जवाब सबसे पहले आएगा। यानी, जो पहले जवाब देंगे, वो पुरस्कार के हकदार होंगे।
4. जवाब सिर्फ ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जाएंगे। ई-मेल आईडी है yugantarprakriti@gmail.com
5. कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, घर का पूरा पता, मोबाइल नंबर, एक रंगीन फोटो, बैंक खाता अथवा यूपीआई आईडी अथवा क्यूआर कोड अवश्य भेजें।
6. विजेताओं को धनराशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी और अगले अंक में उनकी तस्वीर के साथ उनके नाम की घोषणा की जाएगी।
7. इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है। उम्र, लिंग का कोई बंधन नहीं है।
8. इस प्रतियोगिता में युगांतर प्रकृति परिवार के सदस्य हिस्सा नहीं ले सकते।
9. निर्णायक का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। उसे किसी भी सूरत में, कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकती है।

1. हेमलता जी का जन्म कहां हुआ?
2. सोहराय कला क्या है?
3. झारखंड के किस शहर में नया ग्राफिक्स स्टूडियो 75 प्रतिशत बन कर तैयार है?
4. किस जानवर के शरीर के हर टुकड़े की मुंहमांगी कीमत मिलती है?
5. आर्द्रभूमि की परिभाषा क्या है?
6. इंद्रानगर-कल्याणनगर प्रकरण में 17 मार्च को क्या होने वाला है?
7. चूहों की आबादी बढ़ने का कारण क्या है?
8. बच्चे चिड़िया देखने कहां गये थे?
9. हिमालयन मर्मोट कहां पाये जाते हैं?
10. पैंगोलिन अपने शरीर को किस आकार में घुमा लेता है?
11. अरुणाचल में अभी कौन सा प्राणी दिखा है?
12. आर्द्रभूमि का संरक्षण आप कैसे कर सकते हैं?
13. भारत में कुल कितने रामसर स्थल हैं?
14. फरवरी में भारत में किस फसल को नुकसान होने का अंदेशा है?
15. क्या भारत में अभी शतुरमुर्ग पाये जाते हैं?
16. एनजीटी का पूरा नाम क्या है?
17. जमशेदपुर का कौन-सा नेता लोगों के मकान बचाने के लिए एनजीटी में लड़ाई लड़ रहा है?
18. दलमा में लगातार किस जानवर को ट्रैक किया जा रहा है?
19. दलमा नव्य अभयारण्य किस राज्य और किस जिले में है?
20. कोल्हान में प्रवासी पक्षियों की संख्या बढ़ी या घटी है?

Trustworthy Testing Solutions for a Healthier Environment

- Ambient Air Quality monitoring
- Work Zone Ambient Air Quality
- Emission sources Monitoring & Analysis
- (Stack Emission & DG set emission)
- Noise Level monitoring (Ambient Noise & Work Zone Noise)
- Ground water sampling & analysis
- Drinking water sampling & analysis
- Surface water sampling & analysis
- Waste water sampling & analysis
- Soil sampling & analysis



Yugantar Bharati

Analytical & Environmental Engineering Laboratory

Accredited by : NABL and JSPCB

Certified by : 9001:2015 & 18001:2007

Phone : 9304955301/2/3/4/5 Email: ybaeel@gmail.com
Namkum Post Office, Sidroul, Namkum, Ranchi-834010, Jharkhand, India

युगांतर प्रकृति

का मार्च

धम्माफा

युगांतर प्रकृति का ग्राहक बनें, प्रकृति को समझें

युगांतर प्रकृति लेकर आया है स्पेशल सब्सक्रिप्शन स्कीम

इस स्कीम में आपको मिलेगा स्पेशल डिस्काउंट

आज ही इस स्कीम का फायदा उठाये और प्रकृति को नजदीक से जानें....

युगांतर प्रकृति के माध्यम से

स्कीम

स्कूली विद्यार्थियों के लिए	कुल 12 अंक	मात्र 201 रुपये
कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए	कुल 12 अंक	मात्र 225 रुपये
सामान्य पाठकों के लिए	कुल 12 अंक	मात्र 251 रुपये

आपको सिर्फ यह करना है

अपना नाम, स्कूल का नाम, उम्र, कक्षा और घर का पूरा पता हमें वाट्सएप्प कर देना है.

वाट्सएप्प नंबर है **9905474083**

इस पर भुगतान की गई राशि का स्क्रीनशॉट आपको भेज देना है.

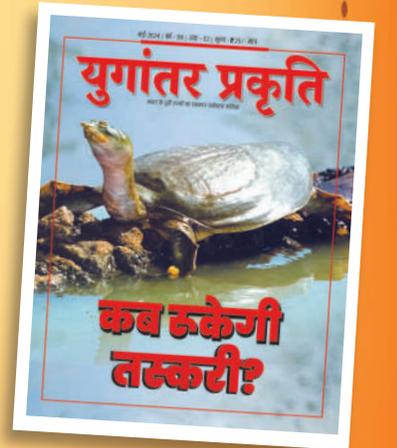
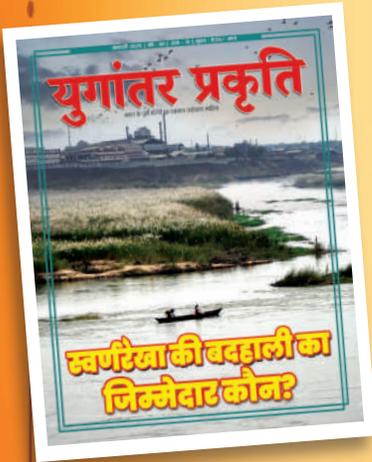
भुगतान यहां करें

NATURE FOUNDATION

ACCOUNT NUMBER: 3611740792

BANK NAME : KOTAK MAHINDRA BANK

IFSC: KKBK0005631



नोट: हर माह युगांतर प्रकृति आपके दिये गये पते पर डाक अथवा कोरियर से पहुंचेगा. यह स्कीम सिर्फ झारखंड के लिए है और मार्च माह के लिए ही है.